बाइबल पर आधारित निर्णय लेना

अध्याय चार

निर्देशात्मक दृष्टिकोण: पवित्रशास्त्र के भाग और पहलू

Manuscript

thirdmill

Biblical Education. For the World. For Free.

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2012 के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी भाग को प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इनकोरपोरेशन, 316, लाइव ओक्स बुलेवार्ड, कैसलबरी, फ्लोरिडा 32707 की लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या अध्ययन के उद्देश्यों के लिए संक्षिप्त उद्धरणों के अतिरिक्त किसी भी रूप में या किसी भी तरह के लाभ के लिए पुनः प्रकशित नहीं किया जा सकता।

पवित्रशास्त्र के सभी उद्धरण बाइबल सोसाइटी ऑफ़ इंडिया की हिन्दी की पवित्र बाइबल से लिए गए हैं। सर्वाधिकार © The Bible Society of India

थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ की सेवकाई के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ एक लाभनिरपेक्ष सुसमाचारिक मसीही सेवकाई है जो पूरे संसार के लिए मुफ्त में बाइबल आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

संसार के लिए मुफ़्त में बाइबल आधारित शिक्षा।

हमारा लक्ष्य संसार भर के हज़ारों पासवानों और मसीही अगुवों को मुफ़्त में मसीही शिक्षा प्रदान करना है जिन्हें सेवकाई के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त नहीं हुआ है। हम इस लक्ष्य को अंग्रेजी, अरबी, मनडारिन, रूसी, और स्पैनिश भाषाओं में अद्वितीय मल्टीमीडिया सेमिनारी पाठ्यक्रम की रचना करने और उन्हें विश्व भर में वितरित करने के द्वारा पूरा कर रहे हैं। हमारे पाठयक्रम का अनुवाद सहभागी सेवकाइयों के द्वारा दर्जन भर से अधिक अन्य भाषाओं में भी किया जा रहा है। पाठ्यक्रम में ग्राफिक वीडियोस, लिखित निर्देश, और इंटरनेट संसाधन पाए जाते हैं। इसकी रचना ऐसे की गई है कि इसका प्रयोग ऑनलाइन और सामुदायिक अध्ययन दोनों संदर्भों में स्कूलों, समूहों, और व्यक्तिगत रूपों में किया जा सकता है।

वर्षों के प्रयासों से हमने अच्छी विषय-वस्तु और गुणवत्ता से परिपूर्ण पुरस्कार-प्राप्त मल्टीमीडिया अध्ययनों की रचना करने की बहुत ही किफ़ायती विधि को विकसित किया है। हमारे लेखक और संपादक धर्मवैज्ञानिक रूप से प्रशिक्षित शिक्षक हैं, हमारे अनुवादक धर्मवैज्ञानिक रूप से दक्ष हैं और लक्ष्य-भाषाओं के मातृभाषी हैं, और हमारे अध्यायों में संसार भर के सैकड़ों सम्मानित सेमिनारी प्रोफ़ेसरों और पासवानों के गहन विचार शामिल हैं। इसके अतिरिक्त हमारे ग्राफिक डिजाइनर, चित्रकार, और प्रोडयूसर्स अत्याधुनिक उपकरणों और तकनीकों का प्रयोग करने के द्वारा उत्पादन के उच्चतम स्तरों का पालन करते हैं।

अपने वितरण के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए थर्ड मिलेनियम ने कलीसियाओं, सेमिनारियों, बाइबल स्कूलों, मिशनरियों, मसीही प्रसारकों, सेटलाइट टेलीविजन प्रदाताओं, और अन्य संगठनों के साथ रणनीतिक सहभागिताएँ स्थापित की हैं। इन संबंधों के फलस्वरूप स्थानीय अगुवों, पासवानों, और सेमिनारी विद्यार्थियों तक अनेक विडिओ अध्ययनों को पहुँचाया जा चुका है। हमारी वेबसाइट भी वितरण के माध्यम के रूप में कार्य करती है और हमारे अध्यायों के अतिरिक्त सामग्रियों को भी प्रदान करती है, जिसमें ऐसे निर्देश भी शामिल हैं कि अपने शिक्षण समुदाय को कैसे आरंभ किया जाए।

थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज a 501(c)(3) कारपोरेशन के रूप में IRS के द्वारा मान्यता प्राप्त है। हम आर्थिक रूप से कलीसियाओं के टैक्स-डीडक्टीबल योगदानों, संस्थानों, व्यापारों और लोगों पर आधारित हैं। हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार इसमें सहभागी हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org को देखें।

विषय-वस्तु

परिचय....................1
पवित्रशास्त्र की विविधता....................1
भाषा....................2
असाधारण....................2
साधारण....................3
साहित्य....................5
आशय....................8
पवित्रशास्त्र में परमेश्वर की व्यवस्था....................8
दस आज्ञाएं....................9
तीन प्रकार के नियम....................11
योग्यताएं....................12
महत्व....................12
प्रयोग....................13
पवित्रशास्त्र की एकता....................17
प्रेम की आज्ञा....................17
अनुग्रह का सुसमाचार....................19
नई वाचा....................21
समन्वयता....................22
निष्कर्ष....................24

बाइबल पर आधारित निर्णय लेना

अध्याय चार

निर्देशात्मक दृष्टिकोण: पवित्रशास्त्र के भाग और पहलू

परिचय

मेरे एक मित्र ने हाल ही में अपने बेटे के लिए एक साइकिल खरीदी। उस साइकिल में कुछ चीजों को जोड़ने की जरूरत थी - जैसे पहिए और पैडल को जोड़ना। परन्तु साइकिल को जोड़ने के कोई निर्देश नहीं दिए गए थे। अब, मेरा मित्र जानता था कि साइकिल कैसी दिखनी चाहिए और यह कैसे काम करती है, इसलिए वह बिना निर्देशों के भी उसे जोड़ पाया। परन्तु कल्पना कीजिए यदि उसने पहले कभी साइकिल देखी न होती तो क्या होता। ऐसे हाल में, वह इसे सही तरीके से जोड़ नहीं पाता।

कुछ रूपों में, बाइबल साइकिल के अलग-अलग भागों के बिना निर्देशों के एक डिब्बे के समान है। जिस प्रकार उन चीजों को एक साथ जोड़ना आसान होता है जिनसे हम परिचित हों, उसी प्रकार बाइबल के अर्थ और सही इस्तेमाल के बारे में कुछ आधारभूत बातों को खोजना भी सरल होता है। दूसरी ओर, जिस प्रकार बिना निर्देशों के जटिल मशीनों को जोड़ना कठिन होता है, उसी प्रकार जब हम पवित्रशास्त्र के कार्यों को समझ नहीं पाते तो जटिल नैतिक प्रश्नों पर बाइबल को लागू करना कठिन हो जाता है।

बाइबल पर आधारित निर्णय लेना की हमारी श्रृंखला का यह चौथा अध्याय है, और हमने इस अध्याय का शीर्षक दिया है, "निर्देशात्मक दृष्टिकोण: पवित्रशास्त्र के भाग और पहलू"।

जिस प्रकार हमने इन सारे अध्यायों में बताया है, नैतिक निर्णय लेने में एक व्यक्ति सदैव परिस्थिति के प्रति परमेश्वर के वचन को लागू करता है। और इसने बाइबल पर आधारित निर्णय लेने में तीन मूलभूत विचारों करे व्यक्त करने में हमारी अगुवाई की है: परमेश्वर के वचन का सही स्तर, जिसे हमने नैतिक शिक्षा के निर्देशात्मक स्तर के साथ जोड़ा; सही लक्ष्य, जो परिस्थिति-संबंधी दृष्टिकोण के अनुरूप है; और सही उद्देश्य, जो अस्तित्व-संबंधी दृष्टिकोण से मेल खाता है।

इस अध्याय में हम निर्देशात्मक दृष्टिकोण को तीसरी बार देखेंगे, जिसमें हम उस प्रक्रिया को देखेंगे जिसके द्वारा हम बाइबल में नैतिक स्तरों को पहचानते हैं। और हम हमारे ध्यान को उन भिन्न तरीकों की ओर लगाएंगे जिसमें पवित्रशास्त्र के भिन्न भाग और पहलू हमारे समक्ष परमेश्वर के मानकों को प्रकट करते हैं।

हम पवित्रशास्त्र के भागों और पहलुओं के हमारे विचार-विमर्श को तीन मुख्य भागों में विभाजित करेंगे। पहला, हम पवित्रशास्त्र में पाई जाने वाली विविध सामग्री को देखेंगे। दूसरा, हम उन पुस्तकों और अनुच्छेदों को ध्यान से देखेंगे जो पवित्रशास्त्र में परमेश्वर की व्यवस्था की रचना करते हैं। और तीसरा, हम पवित्रशास्त्र की उस एकता को संबोधित करेंगे जो बाइबल के सभी भागों और पहलुओं को एक साथ जोड़ती है। आइए हम पवित्रशास्त्र में पाई जाने वाली विविध सामग्री को देखने के द्वारा आरंभ करें।

पवित्रशास्त्र की विविधता

जिसने भी अधिकांश बाइबल को पढ़ा है, उसे इस बात को पहचान लेना चाहिए कि पवित्रशास्त्र एकरूपीय नहीं है। इसमें इतिहास, काव्य, बुद्धि-साहित्य, भविष्यवाणियां, पत्राचार और कई प्रकार के अन्य

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

लेखन पाए जाते हैं। और इन सब लेखनों के भीतर, हम और भी विविधता को पाते हैं। आखिरकार, प्रत्येक लेखक ने अपने तरीके से लिखा, और उसके लेखन भी उसके कार्य में बदलते रहे। कभी उसने आज्ञाएं दीं, कभी उसने विवरणों को स्पष्ट किया; और कभी उसने अपने व्यक्तिगत अनुभव को याद किया। और यह विविधता कोई अकस्माती नहीं है। परमेश्वर ने बाइबल के हर भाग को नैतिक शिक्षा के स्तरों में अपने तरीके से योगदान देने के लिए नियुक्त किया है। अब, क्योंकि पवित्रशास्त्र कई भिन्न तरीकों से बातचीत करता है, इसलिए केवल यह कह देना कि बाइबल क्या कहती है, यह हमारे लिए पर्याप्त नहीं है। हमें यह जानने की भी जरूरत है कि बाइबल कैसे बातचीत करती है ताकि जब हम इसे पढ़ें तो हम इसके अर्थ को समझ सकें।

बाइबल में जो विविधता हम पाते हैं उसका वर्णन कई भिन्न रूपों में किया जा सकता है, और कोई एक तरीका पर्याप्त नहीं होता। परन्तु पवित्रशास्त्र के इस पहलू और मसीही नैतिक शिक्षा के लिए इसके आशयों के भाव को प्रदान करने के लिए हम तीन विषयों को स्पर्श करेंगे: पहला, हम बाइबल में इस्तेमाल की गई भाषा के विविध प्रकारों के बारे में बात करेंगे। दूसरा, बाइबल के विविध साहित्य के बारे में बात करेंगे। और तीसरा, हम आधुनिक नैतिक शिक्षा के लिए इस विविधता के आशयों पर ध्यान देंगे। हम भाषा से संबंधित छोटे और सरल विषयों से आरंभ करके साहित्य के विशाल और अधिक जटिल विषयों की ओर बढ़ेंगे।

भाषा

पहली बात यह है कि बाइबल भाषा की पूरी श्रृंखला को प्रदर्शित करती है जो हम संपूर्ण मानवीय बातचीत में पाते हैं। इसमें कथन, प्रश्न, प्रतिज्ञाएं, प्रस्ताव, श्राप, आशीषें, चेतावनियां, दण्ड के वचन, संकलन, आज्ञाएं, सलाह, आग्रह, विस्मय, विवरण, निराशा की पुकार, अभिलाषा, आभार और प्रेम की अभिव्यक्तियां और बहुत कुछ पाया जाता है। बाइबल-संबंधी भाषा संवेदनात्मक रूप से शिथिल या संवेदात्मक रूप से प्रभारित हो सकती है। इनमें से कुछ काफी कल्पनाशील है, जो प्रतीकों और अलंकारों का प्रयोग करती है, वहीं दूसरे प्रकार की भाषा तुलनात्मक रूप से अकल्पनाशील है, जो विषयों को प्रत्यक्ष रूप में व्यक्त करती है। बाइबल में कटाक्ष और खरी भाषा का प्रयोग सम्मिलित होता है। इसमें परोक्ष वचन और संकेत भी उतने ही पाए जाते है जितनी कि अप्रत्यक्ष टिप्पणियां। यह अतिशयोक्ति और कम बयानी और बोलचाल की भाषा का इस्तेमाल करती है। और बहुत बार यह स्पष्ट बात कहने की चिंता नहीं करती, बल्कि इसकी अपेक्षा कल्पना भर करती है।

भाषा की अद्‌भुत विविधता हमारे समक्ष कई प्रकार की चुनौतियां रखती हैं जब हम बाइबल को पढ़ते हैं। आखिरकार, यदि हम नहीं जानते कि भाषा के इन भिन्न प्रकारों को कैसे पहचानें, और यदि हम यह नहीं समझते कि प्रत्येक कैसे बातचीत करता है, तो संभव है कि हम बाइबल की शिक्षा को गलत समझ लें।

अब सदियों से मसीहियों ने बाइबल की भाषा की विविधता के द्वारा प्रस्तुत चुनौतियों से व्यवहार करने के कई तरीकों का प्रस्ताव दिया है। परन्तु यह कहना सुरक्षित है कि इनमें से अधिकांश समाधान दो समूहों में से एक में आते हैं: वे जो मानते हैं कि बाइबल असाधारण तरीकों में भाषा का प्रयोग करती है, और वे जो मानते हैं कि बाइबल भाषा को साधारण तरीके से इस्तेमाल करती है।

असाधारण

प्रायः जो मानते हैं कि बाइबल असाधारण रूप में बात करती है, वे ऐसे समाधानों का प्रस्ताव देते हैं जो बाइबल में भिन्न प्रकार की भाषा को नजरअंदाज कर देते हैं। इसकी अपेक्षा वे व्याख्या की एक ऐसी

प्रणाली को विकसित करने के लिए बाइबल की भाषा को कुछ ज्यादा ही सरल बना देते हैं जिसे सारे पवित्रशास्त्र पर समान रूप से लागू किया जा सके।

उदाहरण के तौर पर, मध्य युगों में अनेक धर्मविज्ञानियों ने माना था कि क्योंकि बाइबल परमेश्वर के द्वारा प्रेरणा-प्राप्त है, इसलिए यह ऐसे असाधारण तरीकों में बात करती है जो मानवीय समझ से परे हैं। उनके विचारों में, बाइबल के हर लेख में ऐसे विविध प्रतीकात्मक अर्थ पाए जाते थे जो कभी-कभी पवित्रशास्त्र के लेखकों से भी छिपे रहते थे। इस प्रणाली के तहत ऐसा माना जाता था कि हर लेख में कम से कम कुछ लाक्षणिक अर्थ पाए जाते हैं, फिर मानवीय लेखकों का अभिप्राय चाहे जो भी हो।

हाल ही में, अनेक मसीही जो मानते हैं कि पवित्रशास्त्र की भाषा असाधारण है, वे बिल्कुल विपरीत दिशा में चले गए हैं। यह मानने की अपेक्षा कि पवित्रशास्त्र की असाधारण प्रकृति इसकी व्याख्या करने में इसे कठिन बना देती है, उन्होंने इस बात पर बल दिया है कि पवित्रशास्त्र की असाधारण प्रकृति इसकी भाषा को व्याख्या के लिए सरल बना देती है। इनमें से कुछ ने तर्क दिया है कि पवित्र आत्मा प्रत्यक्ष रूप से अपने लोगों के प्रति सच्ची व्याख्याओं को प्रकट करता है, इसलिए यह जानना जरूरी है कि कोई किस प्रकार की भाषा को पढ़ रहा है, इस बात पर ध्यान दिए बिना कि यह सामान्यतः अर्थ को किस प्रकार बताता है। अन्यों ने तर्क दिया है कि पवित्रशास्त्र की भाषा की व्याख्या जितना संभव हो सके उतना अक्षरशः रूप में करनी चाहिए, ताकि लाक्षणिक अर्थों को ढूंढने का प्रयास तभी किया जाए जब गैरअलंकृत शब्द अच्छे भाव को प्रस्तुत नहीं करते।

उदाहरण के तौर पर, यह स्पष्ट है कि साधारण बातचीत में मनुष्य आम तौर पर अतिशयोक्ति या अत्युक्तिपूर्ण कथनों का प्रयोग करते हैं। परन्तु अनेक मसीही जो बाइबल के अधिकार के प्रति समर्पित होते हैं वे यह नहीं मानते कि बाइबल में अतिशयोक्ति पाई जाती है। इसकी अपेक्षा, वे पवित्रशास्त्र के हर कथन को सीधा, तटस्थ, और संक्षिप्त मानते हैं।

सामान्य बोलचाल और लेखन में, हम प्रायः इस आशा के साथ विषयों को सारगर्भित करते हैं कि हमारे श्रोता अपने अन्य ज्ञान के साथ खाली जगहों को भर लें। फिर भी, कुछ मसीही यह मानने में कठिनाई महसूस करते हैं कि प्रेरणा-प्राप्त लेखकों ने वैसा ही किया था। इसकी अपेक्षा, वे अनुच्छेदों को ऐसे देखते हैं जैसे कि वे अपने कार्यक्षेत्र में सीमित होने की अपेक्षा पूरी तरह से व्यापक हों।

इससे बढ़कर, हम पहचानते हैं कि साधारण लेखन और बोलचाल में हम प्रायः व्यंग्यात्मक या कटाक्ष करने वाले हो जाते हैं और हमारे अभिप्राय के ठीक विपरीत बात करते हैं। फिर भी, अनेक विश्वासी इस बात को स्वीकार करने में कठिनाई अनुभव करते हैं कि बाइबल में कटाक्ष या व्यंग्य पाया जाता है।

इन विचारों के विपरीत कि पवित्रशास्त्र की भाषा असाधारण है, एक ऐसा दृष्टिकोण है कि बाइबल साधारण मानवीय भाषा में बातचीत करती है, जिसमें वह मानवीय बातचीत की आम बातों का प्रयोग करती है।

साधारण

आप याद करेंगे कि पिछले अध्यायों में, हमने पवित्रशास्त्र की स्पष्टता के बारे में बात की जिसके द्वारा यह अर्थ निकला था कि बाइबल धुंधली नहीं है, अर्थात् यह ऐसे गुप्त अर्थों से भरी हुई नहीं है जिसे रहस्मयी माध्यमों या विशेष आत्मिक वरदानों या कलीसिया के विशेष अधिकारियों के द्वारा ही खोजा जा सकता है। दूसरे शब्दों में, पवित्रशास्त्र तभी स्पष्ट होता है जब यह साधारण भाषा में और सामान्य तरीके में बात करता है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

यह दर्शाने के लिए कि बाइबल साधारण भाषा में बात करती है, आइए हम कुछ अनुच्छेदों को देखें जहां अक्षरशः रूप में पढ़ना बहुत ही भ्रामक हो सकता है। मत्ती 6:11 में इस विनती को सुनें, जो प्रभु की प्रार्थना का भाग है:

> हमारी दिन भर की रोटी आज हमें दे। (मत्ती 6:11)

जब इस पद को आम मानवीय अभिव्यक्तियों के बिना बनावटी रूप से अक्षरशः भाव में पढ़ा जाता है, तो ऐसा लगता है कि यीशु ने परमेश्वर को रोटी प्रदान करने की आज्ञा दी।

वास्तव में, प्रभु की प्रार्थना की सारी विनतियां आज्ञासूचक हैं, जिसमें केवल "हमारी दिन भर की रोटी आज हमें दे" ही नहीं, बल्कि "हमें बुराई से बचा" भी शामिल है। और यह सत्य है कि यूनानी व्याकरण में आज्ञासूचक कथन प्रायः आज्ञाएं होते हैं।

इस बात ने बाइबल को बहुत ही अक्षरशः रूप में पढ़ने वाले कुछ मसीहियों को यह निष्कर्ष निकालने की ओर अगुवाई दी है कि यीशु के शब्द परमेश्वर के प्रति आज्ञाएं थे। और निसंदेह, क्योंकि प्रभु की प्रार्थना एक ऐसा नमूना है जिसे हमें हमारी प्रार्थना में अपनाना है, इसलिए उन्होंने यह निष्कर्ष निकाला कि हमारे पास परमेश्वर को आज्ञाएं देने का अधिकार है।

परन्तु प्रभु की प्रार्थना में यीशु के शब्दों सहित शेष पवित्रशास्त्र से हम जानते हैं कि आज्ञासूचक क्रियाओं का प्रयोग प्रायः विनतियों और आग्रहों को व्यक्त करने के लिए किया जाता है। यही बात हिन्दी में भी लागू होती है। उदाहरण के लिए, हम कहते हैं, "कृपया, रोटी दे दो" या "कृपया, मेरी सहायता करो।" ये कथन आज्ञासूचक हैं। परन्तु जब हम इन शब्दों को कहते हैं, तो हम आज्ञाएं नहीं दे रहे हैं। आमोस 4:4 पर ध्यान दें, जहां भविष्यवक्ता ने यह कहा:

> बेतेल में आकर अपराध करो, और गिलगाल में आकर बहुत से अपराध करो। (आमोस 4:4)

इन शब्दों को बहुत अधिक अक्षरशः रूप में पढ़ने ने कुछ व्याख्याकारों को यह सोचने को मजबूर किया है कि आमोस वास्तव में अपने श्रोताओं से चाहता था कि वे बेतेल और गिलगाल के मूर्तिपूजक आराधना केन्द्रों में यहोवा के विरूद्ध पाप करें। परन्तु इस प्रकार का पाठन अव्यवहारिक है और अन्य कथनों में प्रकट भविष्यवक्ता के अभिप्रायों से मेल नहीं खाता। उदाहरण के तौर पर, आमोस 5:5 में भविष्यवक्ता ने कहा:

> बेतेल की खोज में न लगो, न गिलगाल में प्रवेश करो। (आमोस 5:5)

इस पद और आमोस की शेष पुस्तक से हमें यह निष्कर्ष निकालना चाहिए कि जब भविष्यवक्ता ने लोगों से बेतेल और गिलगाल में पाप करने की आज्ञा दी, तो उसने कटाक्ष करते हुए या व्यंग्यात्मक रूप में बोला था, उसका अर्थ उसके वचनों के ठीक विपरीत था। वह नहीं चाहता था लोग उन स्थानों में पाप करें, बल्कि उनमें पाप करना बंद कर दें।

बाइबल की भाषा की प्रक्रिया पवित्रशास्त्र के लिए अनोखी नहीं है। इसकी अपेक्षा, बाइबल अपने लेखकों और उनके मूल श्रोताओं की भाषाई परंपरा का प्रयोग करती है। इसका अर्थ है कि यदि हमें जिममेदारी के साथ बाइबल की व्याख्या करनी है तो हमें सीखना है कि उन्होंने साधारण रूप में भाषा का इस्तेमाल कैसे किया, और हमें समझना है कि हरेक लेखक का अभिप्राय क्या था जब उसने यह लिखा था। यदि लेखक ने

अपने शब्दों की रचना इस प्रकार की कि उसके शब्दों को लाक्षणिक रूप में समझा जाए, तो हमें लेखक के अर्थ के लिए लेख को ढूंढ़ते हुए उन्हें लाक्षणिक रूप में पढ़ना चाहिए। दूसरी ओर, यदि बाइबल के लेखक ने सीधे और प्रत्यक्ष रूप से अपने शब्दों को रखा है तो हमारी जिम्मेदारी है कि हम उसके शब्दों की व्याख्या गैरअलंकृत रूप में करें।

साहित्य

जिस प्रकार पवित्रशास्त्र में कई विविधताएं पाई जाती हैं, वैसे ही साहित्य के भी विभिन्न प्रकार हैं। ये भाषा से विशाल और अधिक जटिल रूप हैं, और उन पर अधिकार करना और भी कठिन है। परन्तु उनको समझना पवित्रशास्त्र के भिन्न भागों और पहलुओं को जिम्मेदारी के साथ समझने के लिए महत्वपूर्ण है।

पवित्रशास्त्र में साहित्य के अनेक भिन्न-भिन्न रूप और प्रकार हैं। कुछ के नाम बताएं तो बाइबल के साहित्य में गद्य, काव्य, गीत, व्यवस्था, वर्णन, पत्र, मन्नत, पत्री, भविष्यवाणिय वचन, नीतिवचन, दृष्टांत और नाटक पाए जाते हैं। और इन विशाल रूपों में प्रायः अनेक छोटी श्रेणियां भी पाई जाती हैं। उदाहरण के तौर पर, भविष्यवाणीय वचन के साहित्यिक रूप में हम दण्ड के वचनों, आशीष के वचनों, मुकदमों की भाषा पर आधारित वचनों इत्यादि को पाते हैं। इन रूपों को उनके विषय एवं उनकी संरचना, शैली और भाषा के प्रयोग के द्वारा अलग-अलग देखा जा सकता है। इससे बढ़कर, बाइबल की हर शैली कई तरीकों में अर्थ को बताती है। अतः जिस प्रकार हमें बाइबल में भाषा की जटिलताओं की जानकारी होनी चाहिए, उसी प्रकार हमें भिन्न साहित्यिक रूपों की जटिलताओं की जानकारी होनी चाहिए।

सामान्यतः जब हम नैतिक शिक्षा को क्रियान्वित करते हैं, तो हम बाइबल के ऐसे अनुच्छेदों पर ध्यान देते हैं जिसमें नियम पाए जाते हैं या जो सीधे रूप में नैतिक स्तरों या जिम्मेदारियों को सिखाते हैं। और ये अनुच्छेद निश्चित रूप में नैतिक शिक्षा के हमारे अध्ययन के लिए महत्वपूर्ण हैं। परन्तु हमें यह सोचने की गलती नहीं करनी चाहिए कि अन्य शैलियां नैतिक निर्देशों में कोई योगदान नहीं दे सकतीं या फिर बहुत ही कम योगदान दे सकती हैं। हमारे उद्देश्यों के लिए हमें ध्यान देना चाहिए कि बाइबल-संबंधी वर्णन भी नैतिक नियमों और विधियों को बताते हैं। काव्य और गीत नैतिक बातों को व्यक्त करते हैं। नीतिवचन और अन्य बुद्धि के लेखन नैतिक मूल्यों को दर्शाते हैं। भविष्यवाणी परमेश्वर के नैतिक निर्णयों को मानवीय कार्यों के प्रति प्रसन्नता और अप्रसन्नता के रूप में व्यक्त करती है।

वास्तव में, जैसा कि हमने हमारे पिछले अध्यायों में देखा था, बाइबल का हर अनुच्छेद परमेश्वर के चरित्र को दर्शाता है, और इसलिए हर अनुच्छेद में नैतिक शिक्षा पाई जाती है, फिर चाहे वह अनुच्छेद कोई नियम हो, या पत्री हो, या कविता हो या नीतिवचनों का संग्रह हो, या ऐतिहासिक वर्णन हो या अन्य प्रकार का साहित्य हो। इस कारणवश, जब हम नैतिक शिक्षा को क्रियान्वित करते हैं तो हमें परमेश्वर के नैतिक स्तरों और उनके प्रकाशन के लिए सब प्रकार के बाइबल-संबंधी साहित्य को ढूंढने की आवश्यकता है।

इस विचार को स्पष्ट करने के लिए कि पवित्रशास्त्र में पाए जाने वाली सभी शैलियों को नैतिक विचारों में हमारी अगुवाई करनी चाहिए, आइए बाइबल-संबंधी वर्णनों के विषय पर ध्यान दें। निश्चित रूप से बाइबल के लेखक ऐतिहासिक तथ्यों को अभिलिखित करने में रूचिकर थे। परन्तु इसके साथ-साथ वे विश्वास को प्रकट करने और नैतिक सबक सिखाने में इन तथ्यों का इस्तेमाल करने में भी रूचि रखते थे। हम उन पांच विशेष तरीकों का उल्लेख करेंगे जिनमें ऐतिहासिक वर्णन मसीही नैतिक शिक्षा के हमारे अध्ययन और क्रिया में योगदान देते हैं।

पहला, बहुत ही आधारभूत स्तर पर, बाइबल-संबंधी वर्णन उनके वास्तविक संकलन को स्वीकार करने में हमें प्रेरित करते हैं। हम नैतिक रूप में इस बात पर विश्वास करने में प्रेरित होते हैं कि छुटकारे के इतिहास के विवरण सच्चे हैं। यह विशेषकर सत्य होता है जब यह सुसमाचार की मुख्य घटनाओं के विषय में होता है, जैसे कि यीशु की मृत्यु, गाड़ा जाना, पुनरुत्थान, और स्वर्गारोहण और पिन्तेकुस्त पर उसके द्वारा पवित्र आत्मा को भेजा जाना। परन्तु यह उस हरेक तथ्य के बारे में भी लागू होता है जो पवित्रशास्त्र हमें ऐतिहासिक वर्णनों के द्वारा सिखाता है। बाइबल-संबंधी वर्णनों में इन तथ्यों की प्रस्तुति ही हमें उन पर विश्वास करने को प्रेरित करती है।

दूसरा कारण कि बाइबल-संबंधी वर्णन मसीही नैतिक शिक्षा के लिए महत्वपूर्ण है, यह है कि बाइबल के इतिहास में हमें नैतिक रूप से बदलने की शक्ति है। कहने का अर्थ है कि बाइबल के इतिहास के विषय को जानना मसीही बनने का ही एक भाग है।

जैसा कि हमने पहले अध्याय में देखा था कि केवल अच्छे लोग ही अच्छे कार्यों को करने के योग्य हैं। और केवल वे जो सुसमाचार में सच्चा विश्वास रखते हैं वही अच्छे लोग हैं। निसंदेह, मसीह में उद्धारदायी विश्वास पाने के लिए हमें यह जानना जरूरी है कि उसने क्या किया है। और ये वे तथ्य हैं जिन्हें हम बाइबल के ऐतिहासिक अभिलेख से सीखते हैं। अतः यदि हमें मसीह में उद्धारदायी विश्वास को पाना है तो बाइबल के कुछ इतिहास को जानना जरूरी है। और इसलिए यह कहना सही है कि यदि हमें नैतिक रूप से व्यवहार करना है तो कुछ बाइबल के इतिहास को जानना जरूरी है।

तीसरा, बाइबल-संबंधी वर्णन परमेश्वर के नियमों के लिए ऐतिहासिक स्थिति को प्रदान करते हैं। परमेश्वर के नियम को उचित रूप से समझने के लिए हमें उस ऐतिहासिक संदर्भ को समझना जरूरी है जिसमें वह नियम दिया गया था। उदाहरण के तौर पर, हमें यह देखना जरूरी है कि बाइबल-संबंधी वर्णन परमेश्वर के अनुग्रह पर बल देते हैं ताकि हम उसके नियमों को मानने के लिए उत्साहित हो सकें। दस आज्ञाएं भी इस प्रकार से शुरू होती हैं। जैसे कि हम निर्गमन 20:2 में पढ़ते हैं, परमेश्वर ने यह कहते हुए आरंभ किया:

> मै तेरा परमेश्वर यहोवा हूँ, जो तुझे दासत्व के घर अर्थात् मिस्र देश से निकाल लाया है। **(निर्गमन 20:2)**

इस छोटे से ऐतिहासिक कथन ने दस आज्ञाओं को आरंभ किया, और उनकी आज्ञा मानने के लिए महत्वपूर्ण उत्साह प्रदान किया। वास्तव में, आभार की प्रेरणा के बिना आज्ञा मानने का प्रयास कभी आज्ञाओं की सच्ची आज्ञाकारिता की ओर अगुवाई नहीं करेगा। आखिरकार, जैसा कि हमने पिछले अध्याय में देखा, सारे अच्छे कार्यों में अच्छी प्रेरणा होना जरूरी है।

अतः बाइबल-संबंधी वर्णन नैतिक शिक्षा के लिए महत्वपूर्ण हैं क्योंकि हम परमेश्वर के नियमों को तभी समझ सकते हैं जब हम बाइबल के इतिहास को समझते हैं।

चौथा, बाइबल-संबंधी वर्णन ऐतिहासिक घटनाओं के प्रति परमेश्वर के मूल्यांकन को प्रस्तुत करते हैं। और क्योंकि परमेश्वर के मूल्यांकन हमेशा सही होते हैं, इसलिए वे हमें मजबूत नैतिक अगुवाई प्रदान करते हैं।

आपको याद होगा कि हमने परमेश्वर जिसे आशीष देता है उसे “अच्छे” के रूप में और जिसे परमेश्वर श्रापित या दण्डित करता है उसे “बुरे” के रूप में परिभाषित किया है। बाइबल के लेखन में लेखक ऐसे कार्यों, विचारों और प्रेरणाओं को दर्शाते हैं जिन्हें परमेश्वर या तो आशीषित करता है या दण्डित करता है। ऐसा करने के द्वारा वे अपने पाठकों को ऐसा उदाहरण प्रदान करते हैं जिनका या तो अनुसरण किया जाता है या उन्हें ठुकराया जाता है।

अंत में, कई अवसरों पर बाइबल केइतिहास के लेखकों ने अपनी नैतिक टिप्पणियों को भी लिखा। कभी-कभी उनकी टिप्पणियां छिपी हुई होती हैं, वहीं अन्य समयों में वे काफी स्पष्ट होती हैं। उदाहरण के तौर पर, उत्पत्ति 13:12-13 में मूसा ने सदोम के लोगों से यह बात कही:

> लूत उस तराई के नगरों में रहने लगा; और अपना तम्बू सदोम के निकट खड़ा किया। सदोम के लोग यहोवा के लेखे में बड़े दुष्ट और पापी थे। (उत्पत्ति 13:12-13)

सदोम के बारे में मूसा का नैतिक मूल्यांकन केवल हमें लूत की बुद्धि पर संदेह करने की अगुवाई ही नहीं करता बल्कि उस न्याय का पूर्वानुमान भी देता है जो परमेश्वर उस नगर पर जल्द ही लेकर आएगा।

परमेश्वर के प्रेरणा-प्राप्त वक्ता होने के नाते, बाइबल के ऐतिहासिक प्रलेखों के लेखकों ने अपनी कहानियों के अनेक चरित्रों, स्वभावों, घटनाओं की अच्छाई और बुराई पर टिप्पणी की। उनके मूल्यांकन स्वयं परमेश्वर के दृष्टिकोणों का प्रतिनिधित्व करते हैं और इसलिए हमें अनेक नैतिक विचारों को प्रदान करते हैं।

इसलिए, हमारे नैतिक स्तर के रूप में सारे पवित्रशास्त्र का प्रयोग करने के आशय क्या हैं? पहला, जो हमने ऐतिहासिक लेखनों के बारे में देखा है वह बाइबल-संबंधी साहित्य के दूसरे प्रकारों के बारे में भी सही है: हर प्रकार का साहित्य निर्देशात्मक है; हर प्रकार का साहित्य हमें इस बारे में कुछ सिखाता है कि हमें कैसे सोचना, कार्य करना और महसूस करना चाहिए। और फलस्वरूप, बाइबल का हर अनुच्छेद हम पर नैतिक जिम्मेदारियां डालता है।

उदाहरण के तौर पर, बाइबल-संबंधी काव्य प्रायः उचित भावनात्मक अभिव्यक्ति पर ध्यान देता है, और यह प्रायः परमेश्वर की स्वीकृति और अस्वीकृति का वर्णन करता है। भविष्यवाणी मानवीय स्वभाव के प्रति परमेश्वर की संतुष्टि या क्रोध को दर्शाती है। यह परमेश्वर के अनुग्रह को प्राप्त करने के लिए अनेक कार्यों को प्रकट करती है और ऐसी पापमय बातों के विरूद्ध चेतावनी देती है जो परमेश्वर के क्रोध को लाती हैं। बुद्धि साहित्य परमेश्वर के चरित्र को स्पष्ट करता है, जो हमारा परम नैतिक मानक है, और यह हमें सिखाता है कि व्यवस्था के सिद्धांतों को व्यावहारिक मसीही जीवन पर कैसे लागू किया जाता है। जब एक अनुच्छेद में नैतिक विचारों पर बल नहीं दिया जाता तब भी उन्हें उसमें देखा जा सकता है।

2 तीमुथियुस 3:16-17 में पौलुस के शब्दों पर पुनः ध्यान दीजिए:

> हर एक पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, और समझाने, और सुधारने, और धर्म की शिक्षा के लिये लाभदायक है। ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने, और हर एक भले काम के लिये तत्पर हो जाए। (2 तीमुथियुस 3:16-17)

पौलुस ने बल दिया कि साहित्यिक शैलियों के बावजूद सारा पवित्रशास्त्र मसीहियों को परमेश्वर को प्रसन्न करने हेतु तैयार करता है। इससे बढ़कर, पवित्रशास्त्र का हर अनुच्छेद नैतिक शिक्षा के साथ प्रासंगिक है, इसलिए किसी भी अनुच्छेद के नैतिक पहलुओं पर ध्यान देना सही है- फिर चाहे बाइबल के लेखक ने स्वयं नैतिक पहलू पर बल न दिया हो। सारांश में, यदि हम पवित्रशास्त्र के नैतिक आशयों को नजरअंदाज कर देते हैं, तो हम परमेश्वर के प्रकाशन में दी जाने वाली नैतिक अगुवाई के संपूर्ण क्षेत्र से स्वयं को काट देते हैं।

आशय

अब यह तथ्य कि पवित्रशास्त्र हमें नैतिक शिक्षा के बारे में सिखाने के लिए कई प्रकार की भाषा और साहित्य का इस्तेमाल करता है, इसमें आज हमारे नैतिक शिक्षा सिखाने के विषय में कई रोचक आशय पाए जाते हैं। एक बात यह है कि पवित्रशास्त्र की विविधता यह दर्शाती है कि नैतिकता के बारे में हमारी अपनी शिक्षा इन भिन्न शैलियों के प्रयोग से लाभ प्राप्त कर सकती है।

यह सत्य है कि प्रत्यक्ष नैतिक निर्देश हमें कई बातों को सिखाने में सहायता करता है। परन्तु जब हम पूरी रीति से सीधे निर्देशों पर निर्भर रहते हैं तो कुछ बातों को खोया भी जा सकता है। सीधे कथन प्रायः उस प्रकार से हमारी भावनाओं को स्पर्श नहीं करते जितने काव्य और ऐतिहासिक वर्णन करते हैं, वैसे ही जैसे पवित्रशास्त्र के सामान्य नैतिक निर्देश उतने भावनात्मक या चिरस्मरणीय नहीं होते जितने भजन या यीशु की कहानियां होती हैं। विशिष्ट नैतिक व्याख्यानों में खोजी गई परिस्थितियां कभी-कभी ही इतनी अर्थपूर्ण होती हैं जितनी कि ऐतिहासिक वर्णनों की। और सामान्य कथन हमें नीतिवचनों के समान नैतिक विषयों पर मनन करने हेतु द्रवित नहीं करते।

अतः कभी-कभी पवित्रशास्त्र द्वारा प्रयोग किए गए भाषा के भिन्न प्रकारों में नैतिक शिक्षा को सिखाना और प्रचार करना सहायक हो सकता है। हमारे परिदृश्य में, नैतिक निर्णय पर हमारी शिक्षा तभी प्रभावशाली होगी यदि हम अपने काव्य रूपकों, कहानियों, नीतिवचनों, दृष्टांतों और ऐसी अन्य शैलियों का प्रयोग करें जिन्हें सामान्यतः नैतिक शिक्षा के साथ नहीं जोड़ा जाता।

इसलिए, जब हम मसीही नैतिक शिक्षा के बारे में सोचते हैं, तो हमें यह याद रखना चाहिए कि पवित्रशास्त्र में भाषा और साहित्य की सारी विविधता निर्देशात्मक है। और हमें उन भिन्न मार्गों की ओर विशेष ध्यान देना चाहिए जिनमें हर प्रकार की भाषा और साहित्य नैतिक निर्देशों को बताते हैं। हर प्रकार की भाषा और साहित्य के उचित संचालन से ही हम इसकी नैतिक शिक्षाओं को सही तरीके से समझ पाएंगे।

जब हमने यह दर्शा दिया है कि किस प्रकार बाइबल में भाषा और साहित्य के भिन्न प्रकार नैतिक स्तर के रूप में पवित्रशास्त्र के हमारे प्रयोग में हमारी अगुवाई करने चाहिए, तो अब हमें हमारे ध्यान को पवित्रशास्त्र में परमेश्वर की व्यवस्था की ओर लगाना चाहिए, अर्थात् बाइबल के ऐसे भागों की ओर जो नैतिक शिक्षा को सबसे स्पष्ट रूप में संबोधित करते हैं।

पवित्रशास्त्र में परमेश्वर की व्यवस्था

मसीही और यहूदी परंपराओं में मूसा की पांच पुस्तकें- उत्पत्ति, निर्गमन, लैव्यवस्था, गिनती और व्यवस्थाविवरण- सामूहिक रूप से "व्यवस्था" के रूप में जानी जाती हैं। परन्तु जब हम इन अध्यायों में परमेश्वर की व्यवस्था के बारे में बात करते हैं तो हम प्राथमिक रूप से मूसा की पुस्तकों के बारे में नहीं बल्कि उन भागों का उल्लेख करेंगे जो कानूनी भाषा के साहित्यिक रूप में लिखी गईं थीं। इन भागों को मुख्यतः निर्गमन, लैव्यवस्था, गिनती और व्यवस्थाविवरण में पाया जाता है। परन्तु उन पुस्तकों में ऐतिहासिक वर्णन, काव्य, सूचियां और ऐसे भाग जो कानूनी नियमों के भाग नहीं हैं, वे भी पाए जाते हैं। इससे बढ़कर, कानूनी नियमों के कुछ भाग मूसा की पुस्तकों के बाहर भी पाए जाते हैं।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

अब, जैसे कि हम कह चुके हैं, परमेश्वर की व्यवस्था पवित्रशास्त्र का एकमात्र भाग नहीं है जिसमें निर्देशात्मक नैतिक निर्देश पाए जाते हैं। सारा पवित्रशास्त्र निर्देशात्मक है। परन्तु व्यवस्था में परमेश्वर की अनेक नैतिक मांगों की सबसे स्पष्ट और सटीक अभिव्यक्तियां पाई जाती हैं, और इसने नैतिक आकलन के आरंभिक स्थान के रूप में पारंपरिक रूप में अच्छा काम किया है।

परमेश्वर की व्यवस्था का हमारा आकलन दो भागों में विभाजित होगा: पहला, हम दस आज्ञाओं के महत्व को स्पष्ट करेंगे, जो कि परमेश्वर की व्यवस्था की बुनियादी आज्ञाएं हैं। और दूसरा, हम परमेश्वर की व्यवस्था के उन तीन भिन्न प्रकारों का परिचय देंगे जिन्हें धर्मविज्ञानियों ने पारंपरिक रूप से पहचाना है। आइए हम दस आज्ञाओं की ओर हमारे ध्यान को लगाते हुए आरंभ करें।

दस आज्ञाएं

दस आज्ञाओं का वर्णन निर्गमन अध्याय 20 और व्यवस्थाविवरण 5 में पाया जाता है। विभिन्न धर्मविज्ञानी परंपराएं आज्ञाओं को अलग-अलग तरीके से गिनती हैं, परन्तु इन अध्यायों में हम पारंपरिक प्रोटेस्टेंट संख्या का अनुसरण करेंगे। दस आज्ञाओं को निम्नलिखित तरीके से सारगर्भित किया जा सकता है:

> आज्ञा 1: तू मुझे छोड़ दूसरों को ईश्वर करके न मानना।
> आज्ञा 2: तू अपने लिये कोई मूर्ति खोदकर न बनाना।
> आज्ञा 3: तू अपने परमेश्वर का नाम व्यर्थ न लेना।
> आज्ञा 4: तू विश्रामदिन को पवित्र मानने के लिये स्मरण रखना।
> आज्ञा 5: तू अपने पिता और अपनी माता का आदर करना।
> आज्ञा 6: तू हत्या न करना।
> आज्ञा 7: तू व्यभिचार न करना।
> आज्ञा 8: तू चोरी न करना।
> आज्ञा 9: तू किसी के विरूद्ध झूठी साक्षी न देना।
> आज्ञा 10: तू किसी के घर का लालच न करना।

यद्यपि कुछ धर्मविज्ञानी दस आज्ञाओं से ऐसे व्यवहार करते हैं जैसे कि वे मूसा की व्यवस्था के किसी अन्य भाग के समान हो, फिर भी बाइबल दर्शाती है कि दस आज्ञाओं में पवित्रशास्त्र की अन्य आज्ञाओं से अधिक महत्व पाया जाता है।

दस आज्ञाओं का महत्व ऐतिहासिक और धर्मवैज्ञानिक दोनों रूपों में है। उनका ऐतिहासिक महत्व इस बात पर निर्भर रहता है कि हमारे ज्ञान के लिए ये नियम पहले लिखित कानूनी नियम थे जिन्हें इस्राएल राष्ट्र द्वारा पहले प्राप्त किया गया था। पौलुस ने इस बात के प्रति गलातियों 3:17 में विशेष ध्यान दिया जहां उसने ये शब्द लिखे:

> जो वाचा परमेश्वर ने पहिले से पक्की की थी, उस को व्यवस्था चार सौ तीस बरस के बाद आकर नहीं टाल देती, कि प्रतिज्ञा व्यर्थ ठहरे। (गलातियों 3:17)

पौलुस ने दस आज्ञाओं को प्रदान किए जाने को व्यवस्था के आरंभ के रूप में कहा, और यह दर्शाया कि यह पहली बार था कि परमेश्वर ने इस रूप में परमेश्वर की व्यवस्था को रखा था। इस्राएल ने मूसा के

माध्यम से दस आज्ञाएं प्रदान की थीं। दस आज्ञाओं को प्राप्त करने के द्वारा इस्राएल एक व्यापक और परमेश्वर की पवित्र मांगों के अलौकिक रूप से प्रकट नियमावली को प्राप्त करने वाला पहला राष्ट्र बन गया।

निसंदेह, परमेश्वर के लोगों के पास मूसा से पहले की भी कई आज्ञाएं थीं। हम नूह के जलप्रलय के समय में भी स्पष्टता से देखते हैं कि परमेश्वर के पास ऐसे कई स्तर थे जिनके पालन की अपेक्षा उसने अपने लोगों से की थी। और जब लोग परमेश्वर की आज्ञा मानने में असफल हो गए तो उसने सारी पृथ्वी को जलप्रलय से नाश कर दिया। इससे बढ़कर, अब्राहम भी कानूनों और शर्तों के बिना नहीं था। उत्पत्ति 17:1 में परमेश्वर ने उसे व्यापक और चुनौतीपूर्ण निर्देश दिया:

> मेरी उपस्थिति में चल और सिद्ध होता जा। (उत्पत्ति 17:1)

अब दस आज्ञाएं ही ऐसे नियम नहीं थे जो इस्राएल को तब दिए गए थे जब वे सीनै पर्वत की तराई में तम्बू लगाए हुए थे। परन्तु उन आज्ञाओं ने जब वे सीनै पर्वत के पास ही थे तो इस्राएल द्वारा प्राप्त किए गए अनेक नियमों के आरंभिक और सारांश कथन के रूप में कार्य किया। ये अन्य नियम, जिन्हें आम तौर पर वाचा की पुस्तक के रूप में जाना जाता है, निर्गमन 21-23 में पाए जाते हैं। दस आज्ञाओं के साथ वाचा की पुस्तक ने इस्राएल के आरंभिक लिखित कानूनी नियमावली की रचना की। बाद में, इस नियमावली में अनेक अन्य नियमों को जोड़ कर विशाल कर दिया गया।

अस्थाई महत्व होने के अतिरिक्त दस आज्ञाओं में धर्मविज्ञानी या वैचारिक महत्व भी पाया जाता है। जैसा कि हम निर्गमन 24:12 में पढ़ते हैं:

> तब यहोवा ने मूसा से कहा, पहाड़ पर मेरे पास चढ़, और वहां रह; और मै तुझे पत्थर की पटियाएं, और अपनी लिखी हुई व्यवस्था और आज्ञा दूंगा, कि तू उनको सिखाए। (निर्गमन 24:12)

एक बात यह है कि वाचा की पुस्तक, जो मूसा ने निर्देशों की पुस्तक के अनुसार लिखी थी, के विपरीत स्वयं परमेश्वर ने पत्थर की तख्तियों पर दस आज्ञाओं को लिखा था।

व्यवस्थाविवरण 9:10 पुष्टि करता है कि स्वयं परमेश्वर ने पत्थर की तख्तियों पर दस आज्ञाओं को लिखा था। जहां मूसा ने दावा किया:

> और यहोवा ने मुझे अपने ही हाथ की लिखी हुई पत्थर की दोनों पटियाओं को सौंप दिया। (व्यवस्थाविवरण 9:10)

स्वयं दस आज्ञाएं लिखने के द्वारा परमेश्वर ने दर्शाया कि उसके नियमों में दस आज्ञाएं विशेष थीं, और उन पर अधिक ध्यान और महत्व देने की आवश्यकता थी, और एक भाव में उसकी आज्ञाओं में सबसे महत्वपूर्ण थीं।

दस आज्ञाओं के धर्मविज्ञानी महत्व को उस विशेष अवसर के द्वारा भी दर्शाया जाता है जिनमें इस्राएल ने उन्हें प्राप्त किया था। व्यवस्था के दिए जाने के समय बादल गरजे और बिजली चमकी, धुंआ उठा, बादल छाए और आकाशीय तुरही फूंकी गईं। इस समय के दौरान परमेश्वर ने केवल मूसा को ही नहीं बल्कि यहोशू, हारून और इस्राएल के सत्तर अगुवों को भी अनुमति दी कि वे उसे देखें।

दस आज्ञाओं के धर्मविज्ञानी महत्व पर व्यवस्थाविवरण 4:13 में भी बल दिया गया है जहां मूसा ने दस आज्ञाओं को अपने लोगों के साथ परमेश्वर की वाचा के रूप में पहचाना:

> (परमेश्वर) ने तुम को अपनी वाचा के दसों वचन बताकर उनके मानने की आज्ञा दी; और उन्हें पत्थर की दो पटियाओं पर लिख दिया। (व्यवस्थाविवरण 4:13)

इससे बढ़कर, निर्गमन 40:20 में दस आज्ञाओं को वाचा के संदूक, परमेश्वर की चैकी में रखा गया जो इस्राएल के साथ परमेश्वर की उपस्थिति से करीबी से जुड़ी धार्मिक वस्तु थी। वाचा की पुस्तक और शेष नियमों को ऐसी विशेष पहचान नहीं मिली थी। उदाहरण के तौर पर, मत्ती 19:17-19 में हम यीशु और एक व्यक्ति के बीच निम्नलिखित चर्चा को पाते हैं जिसने उससे पूछा था कि अनन्त जीवन कैसे प्राप्त करे:

> यीशु ने उस से कहा,... पर यदि तू जीवन में प्रवेश करना चाहता है, तो आज्ञाओं को माना कर। उस ने उस से कहा, कौन सी आज्ञाएं? यीशु ने कहा, यह कि हत्या न करना, व्यभिचार न करना, चोरी न करना, झूठी गवाही न देना। अपने पिता और अपनी माता का आदर करना, और अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखना। (मत्ती 19:17-19)

नियम जो यीशु ने बताए वे दस आज्ञाओं से लिए गए थे, केवल पड़ोसी से प्रेम करने के अतिरिक्त जिसे लैवयवस्था 19:18 से लिया गया था और जो उन नियमों को सारगर्भित करता है जिनका उल्लेख यीशु ने दस आज्ञाओं से किया था। सारांश में, यीशु ने दर्शाया था कि दस आज्ञाओं को मानने के द्वारा एक व्यक्ति अनन्त जीवन को प्राप्त कर सकता है। निसंदेह, यीशु ने यह भी सिखाया कि कोई भी इतना भला नहीं कि इन आज्ञाओं को माने। परन्तु हमारी चर्चा का बिंदू यह है कि यीशु ने बहुत ही महत्वपूर्ण रूप में दस आज्ञाओं के महत्व की पुष्टि की थी। नए नियम में भी, दस आज्ञाओं के बारे में इस प्रकार से बात की गई है जो उनके धर्मविज्ञानी महत्व को प्रकट करते हैं।

ऐतिहासिक और धर्मविज्ञानी महत्व जो बाइबल दस आज्ञाओं को देती है, उसे भी संपूर्ण इतिहास में मसीही और यहूदी परंपराओं में पहचाना और दर्शाया गया है। उदाहरण के तौर पर, आराधनालय सामान्यतः दस आज्ञाओं के प्रतीकों को प्रदर्शित करते हैं। और आज्ञाओं के पत्थर की दो तख्तियां मसीही प्रतिमासंकलन में बहुत ही आम है। इससे बढ़कर, ये आज्ञाएं मसीही प्रार्थना-विधि का एक महत्वपूर्ण भाग रही हैं। सारांश में, कई सदियों से मसीही और यहूदी परंपराएं इस बात पर सहमत रहे हैं कि परमेश्वर की व्यवस्था का यह भाग पवित्रशास्त्र के अन्य नैतिक निर्देशों पर महत्व रखता है।

अब जब हमने उस महत्व और प्रमुखता को देख लिया है जो पवित्रशास्त्र दस आज्ञाओं पर रखता है, तो हमें हमारे ध्यान को उन तीन पारंपरिक श्रेणियों या नियमों के प्रकारों की ओर लगाना चाहिए जिन्हें हम पवित्रशास्त्र में पाते हैं।

तीन प्रकार के नियम

कलीसिया की अधिकांश प्रोटेस्टेंट शाखाओं में बाइबल के पुराने नियम के भिन्न नियमों को तीन मुख्य समूहों में विभाजित करना आम बात रही है: नैतिक नियम, आनुष्ठानिक नियम, और सामान्य या सार्वजनिक नियम। नैतिक नियमों को विशेष रूप से परमेश्वर के नैतिक स्तरों को दर्शाने के लिए माना जाता है और सामान्यतः उन्हें दस आज्ञाओं के साथ देखा जाता है। सार्वजनिक नियम समाज के संचालन के लिए होते हैं, विशेषकर, इस्राएल के उस समय के दौरान जब परमेश्वर को राजा के समान समझा जाता था।। आनुष्ठानिक नियम वे हैं जो परमेश्वर की आराधना के लिए निर्देश प्रदान करते हैं। प्रायः, पुराने नियम की बलिदानी प्रणाली, और तम्बू एवं मन्दिर प्रबंधन के साथ गहराई से जुड़े होते हैं।

इन भिन्नताओं ने कलीसिया के इतिहास में इतनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है कि हम उन्हें बहुत ही सावधानी के साथ देखेंगे, इन पारंपरिक विभाजनों की कुछ महत्वपूर्ण योग्यताओं को संबोधित करेंगे, दूसरा, इन विभाजनों के महत्व की पुष्टि करेंगे; और तीसरा, नैतिक शिक्षा के अध्ययन के प्रति नियमों की पारंपरिक श्रेणियों के उचित प्रयोग की चर्चा करेंगे। आइए पहले हम पुराने नियम के त्रिरूपीय विभाजन की कुछ विशेषताओं के बारे में सोचें।

योग्यताएं

यद्यपि ऐसी बहुत सी सकारात्मक बातें हैं जिन्हें व्यवस्था के पारंपरिक त्रिरूपीय विभाजन के बारे में कहा जा सकता है, फिर भी पवित्रशास्त्र में नियमों को श्रेणीबद्ध करना चुनौतियों से खाली नहीं है। पहला, बाइबल के अधिकांश विद्वान सही रूप से ध्यान देते हैं कि तीन पारंपरिक श्रेणियां बाइबल में स्पष्ट रूप से नहीं सिखाई गई हैं। अर्थात्, बाइबल में कहीं भी हम ऐसे निश्चित कथन को नहीं पाते कि ऐसे भिन्न प्रकार के नियम हैं जिन्हें नैतिक, आनुष्ठानिक और सार्वजनिक कहा जाता है, वहां बस ऐसे निर्देश हैं जो स्पष्ट करते हैं कि कौनसे नियम किन श्रेणियों से संबंधित हैं। अब ये श्रेणियां कई रूपों में वैध हैं, परन्तु हमें उनके बारे में एक समान स्पष्ट और साफ रूप में नहीं सोचना चाहिए।

दूसरा, पवित्रशास्त्र कुछ नियमों को स्पष्ट रूप से एक से अधिक श्रेणियों से संबंधित होते हुए प्रस्तुत करता है। उदाहरण के तौर पर, निर्गमन 20:8-11 में सब्त का पालन करने की आज्ञा को स्पष्ट रूप में दस आज्ञाओं, अर्थात् नैतिक नियम में रखा गया है। फिर भी, सब्त की आज्ञा को निर्गमन 31:14-16 में इस्राएल की आराधना की रीतियों के संकलन में भी रखा गया है।

पवित्रशास्त्र हत्या न करने की आज्ञा को भी स्पष्ट रूप से नैतिक और सार्वजनिक रूप में पहचानता है। यह आज्ञा निर्गमन 20:13 में दस आज्ञाओं में से एक आज्ञा है, जो उसे नैतिक नियम के रूप में दर्शाता है। परन्तु पुराने नियम ने यह भी स्पष्ट कर दिया कि प्रशासन को हत्यारों को दण्ड देना था, जिससे हत्या करना एक सार्वजनिक विषय भी बन गया था।

अतः जब हम पुराने नियम के नियमों को देखते हैं तो अनेक नियम स्पष्ट रूप से एक से अधिक विभाजनों में आते हैं। वास्तव में, यह कहना सुरक्षित होगा कि पुराने नियम के सभी नियमों में नैतिक, सार्वजनिक और आनुष्ठानिक पहलू पाए जाते थे।

इस तरह से इसके बारे में सोचें। एक विशेष लेख में मुख्य रूप से चाहे जो भी निकलकर आए, हर नियम नैतिकता का एक नियम था; हर नियम का उन सामाजिक संबंधों पर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष प्रभाव था जिन्हें सार्वजनिक नियमों द्वारा संचालित किया जाता था; और किसी न किसी रूप में सभी नियमों के पालन और उल्लंघन ने इस्राएल के लोगों द्वारा आराधना की रीतियों में भाग लेने को प्रभावित किया। इस कारण, व्यवस्था के किसी एक विभाजन में हर नियम को रखने की अपेक्षा प्रायः नियमों के भिन्न “पहलुओं” के बारे में बात करना प्रायः बेहतर होता है।

इन योग्यताओं के बावजूद, हमें इस बात की जानकारी भी होनी चाहिए कि पारंपरिक त्रिरूपीय विभाजन में काफी महत्व पाया जाता है जब यह समझने की बात आती है कि परमेश्वर किस प्रकार अपनी व्यवस्था को लागू करना चाहता था।

महत्व

पहला, पारंपरिक त्रिरूपीय विभाजन स्पष्ट रूप से यह देखने में सहायता करता है कि व्यवस्था अपने लोगों के जीवनों के लिए परमेश्वर का व्यापक स्तर था। व्यवस्था ने केवल जीवन के एक छोटे भाग को ही

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

संचालित नहीं किया; बल्कि इसने सारे जीवन को संचालित किया। यह इसलिए स्पष्ट है क्योंकि व्यवस्था का पारंपरिक त्रिरूपीय विभाजन उस सच्चे अंतर को दर्शाता है जो पवित्रशास्त्र उन तीनों कार्यक्षेत्रों के बीच प्रकट करता है, जिसने इस्राएल के परमेश्वर पर भरोसे को संचालित किया, अर्थात् भविष्यवक्ता, याजक और राजा के कार्यक्षेत्र। नैतिक नियम का भविष्यवाणिय कार्यक्षेत्र के साथ गहरा से संबंध होता है, जो धार्मिकता के लिए परमेश्वर की आज्ञा प्रदान करता है। आनुष्ठानिक नियम याजकीय कार्यक्षेत्र के साथ उपयुक्त बैठता है क्योंकि यह याजकों द्वारा किए जाने वाले कार्यों से संबंधित होता है, जैसे कि प्रायश्चित। और सार्वजनिक नियम राजा, परमेश्वर के वाचायी लोगों के प्रशासक, के कार्यक्षेत्र से गहराई से जुड़ा होता है।

दूसरा, यह त्रिरूपीय अंतर उन नियमों की व्याख्या करने में सहायता करता है जिनको बाइबल पूरी तरह से स्पष्ट नहीं करती। समान नियमों को एक साथ रखने के द्वारा, धर्मविज्ञानी उन अनेक नियमों के मूल अर्थ और प्रयोग को निर्धारित करने में और अधिक योग्य हो सकते हैं जिनके बारे में बाइबल बहुत कम बात करती है। आखिरकार, जब बाइबल हमें किसी एक नियम को लागू करने के बारे में विस्तरित जानकारी देती है और वैसे ही नियम के बारे में बहुत कम जानकारी देती है, तो पहले नियम से विचारों को लेने के द्वारा दूसरे नियम के प्रति हमारे ज्ञान को बढ़ाना ठीक है।

अब जब हमने व्यवस्था के पारंपरिक विभाजन की कुछ योग्यताओं को देख लिया है और पवित्रशास्त्र के हमारे ज्ञान के लिए इसके महत्व पर बल दे दिया है, तो हमें तीसरे विषय की ओर हमारे ध्यान को मोड़ना जरूरी है: वह है, नैतिक शिक्षा के प्रति व्यवस्था के पारंपरिक त्रिरूपीय विभाजन का उचित प्रयोग।

प्रयोग

यद्यपि अनेक धर्मविज्ञानी पुराने नियम की व्यवस्था के पारंपरिक विभाजनों की वैधता पर सहमत होते हैं, फिर भी वे इस बात पर असहमत होते हैं कि नैतिक शिक्षा के अध्ययन पर इन श्रेणियों को कैसे लागू किया जाए। कुछ ने कहा है कि नियमों की सारी श्रेणियां आधुनिक मसीहियों पर लागू नहीं होतीं। उनकी समझ में इन श्रेणियों का अस्तित्व, और नियमों की उचित पहचान एक यन्त्र को प्रदान करती है जिसके द्वारा वे अपने जीवनों पर परमेश्वर के वचन को लागू करने से बच सकते हैं। दूसरे धर्मविज्ञानियों ने कहा कि सारे अलग-अलग नियम अभी भी लागू होते हैं, परन्तु अपने कुछ पहलुओं के साथ ही। फिर कुछ और लोगों ने तर्क दिया कि पारंपरिक श्रेणियां यह देखने में सहायता करती हैं कि हर नियम का हर पहलू कैसे हर मसीही के जीवन पर लागू होना चाहिए।

उदाहरण के तौर पर, अध्याय 19 के भाग 3 में विश्वास के वेस्टमिनस्टर अंगीकरण के कथन पर ध्यान दें:

> सभी... आनुष्ठानिक नियम नए नियम के अधीन अब निष्प्रभाव हो गए हैं

यह कथन इस बात को दर्शाता है कि यीशु की मृत्यु, गाड़े जाने, पुनरुत्थान और स्वर्गारोहण के बाद परमेश्वर के लोगों को उन अनेक व्यवहारों को दर्शाने की आवश्यकता नहीं है जो मूसा की बलिदानी और मन्दिर पद्धति के तहत आवश्यक थे। हमें अब मन्दिर के नियमों को मानने या स्त्रियों और अन्यजाति के लोगों को परमेश्वर की पवित्र उपस्थिति से दूर रखने, या हमारे पाप के लिए जानवरों को बलिदान करने की जरूरत नहीं है।

विश्वास का वेस्टमिनस्टर अंगीकरण सार्वजनिक नियमों के संबंध में ऐसे ही कथन को दर्शाता है, परन्तु अनुमति देता है कि सामान्य निष्पक्षता, या आधारभूत नैतिक सिद्धांत निरंतर लागू रहते हैं। यह अध्याय 19 के खण्ड 4 में इस्राएल के सार्वजनिक नियमों के बारे में बात करता है, जहां यह कहता है:

> एक राजनीतिक मंडल के रूप में उनके लिए भी उसने विभिन्न नियम दिए जो उस अवस्था के लोगों के साथ समाप्त हो गए, और अब उनका कोई प्रभाव नहीं, उससे आगे उसकी आम समानता की मांग हो सकती है।

पुनः, यहां मूल विचार यह है कि सार्वजनिक नियमों की विशेष अपेक्षाएं अब लागू नहीं होती; वे अब "समाप्त" हो चुकी हैं।

अब यह सत्य है कि विश्वासियों को अब उन अनेक रूपों में व्यवहार करने की आवश्यकता नहीं जिन्हें पुराने नियम में बताया गया है, विशेषकर उन नियमों का पालन करने की जो पुराने नियमों की रस्मों और सार्वजनिक प्रशासन से संबंधित हैं। इन व्यवहारों का स्थान अब नए नियम के संपूर्ण प्रकाशन ने ले लिया है। पुराने नियम के सार्वजनिक और आनुष्ठानिक नियम अब इस भाव में वास्तव में "समाप्त" हो चुके हैं कि हमें जीवन के पुराने नियम के प्रारूपों की ओर लौटने की आवश्यकता नहीं है।

परन्तु यह महसूस करना महत्वपूर्ण है कि दूसरे भाव में पुराने नियम के सार्वजनिक और आनुष्ठानिक नियम आज भी आधुनिक मसीहियों पर लागू होते हैं। सार्वजनिक और आनुष्ठानिक नियम नैतिक नियमों के समान आज भी परमेश्वर के स्तर के रूप में हमारी अगुवाई करते हैं।

कम से कम चार ऐसे कारण हैं कि मसीहियों को आज भी नैतिक अगुवाई के लिए पुराने नियम के सार्वजनिक और आनुष्ठानिक नियमों और नैतिक नियमों की ओर देखना चाहिए।

पहला, परमेश्वर का चरित्र हमसे इन नियमों के प्रकाशन से सीखने की मांग करता है। जैसा कि हम पहले ही देख चुके हैं, परमेश्वर का चरित्र नैतिक शिक्षा के लिए हमारा परम स्तर है। और पुराने नियम की व्यवस्था परमेश्वर के चरित्र को प्रदर्शित करती है; यह इस बात का प्रकाशन है कि परमेश्वर कौन है और वह कैसा है। और परमेश्वर का चरित्र कभी बदला नहीं है। इसका अर्थ है कि पुराने नियम में व्यवस्था ने परमेश्वर के बारे में जो कुछ भी प्रकट किया है वह आज भी बना हुआ है। सारांश में, पुराने नियम के सार्वजनिक और आनुष्ठानिक नियम आज भी हमारे नैतिक स्तर को दर्शाते हैं।

दूसरा, पवित्रशास्त्र भी पुराने नियम के अंतिम तक के हर नियम के निरन्तर आधुनिक प्रयोग के बारे में सिखाता है। उदाहरण के तौर पर, मत्ती 5:18-19 में यीशु ने यह सिखाया:

> जब तक आकाश और पृथ्वी टल न जाएं, तब तक व्यवस्था से एक मात्रा या बिन्दु भी बिना पूरा हुए नहीं टलेगा। इसलिये जो कोई इन छोटी से छोटी आज्ञाओं में से किसी एक को तोड़े, और वैसा ही लोगों को सिखाए, वह स्वर्ग के राज्य में सब से छोटा कहलाएगा; परन्तु जो कोई उन का पालन करेगा और उन्हें सिखाएगा, वही स्वर्ग के राज्य में महान् कहलाएगा। **(मत्ती 5:18-19)**

यीशु के अनुसार, प्रत्येक नियम परमेश्वर के स्तर को प्रकट करता रहेगा जब तक सब कुछ पूरा नहीं हो जाता। परन्तु सब कुछ अभी पूरा नहीं हुआ है- मसीह अभी तक लौटा नहीं है। जब तक उसका पुनरागमन नहीं होता, छोटी से छोटी आज्ञाओं को सिखाया जाना और उनका पालन किया जाना जरूरी है। अतः किसी न किसी रूप में सार्वजनिक और आनुष्ठानिक नियम हमारे जीवनों के लिए परमेश्वर के मानकों को सिखाना जारी रखते हैं।

तीसरा, अटूट सत्य यह है कि बाइबल निरन्तर रूप से सिखाती है कि आनुष्ठानिक, सार्वजनिक और नैतिक विभाजनों के अंतर के बावजूद भी व्यवस्था एक एकीकृत रचना है, और यह एक साथ खड़ी रहती है। उदाहरण के तौर पर, याकूब 2:10-11 में हम इन शब्दों को पढ़ते हैं:

> क्योंकि जो कोई सारी व्यवस्था का पालन करता है परन्तु एक ही बात में चूक जाए तो वह सब बातों में दोषी ठहरा। इसलिये कि जिस ने यह कहा, कि तू व्यभिचार न करना उसी ने यह भी कहा, कि तू हत्या न करना। (याकूब 2:10-11)

याकूब के मन में व्यवस्था अविभाजित थी क्योंकि यह सारी एक ही परमेश्वर के द्वारा दी गई थी।

चौथा, सारा पवित्रशास्त्र, न कि कुछ भाग, हमारा नैतिक उपदेश है। इसका अर्थ है कि आनुष्ठानिक और सार्वजनिक नियमों, एवं नैतिक नियमों में आधुनिक नैतिक शिक्षा के बारे में हमें सिखाने के लिए कुछ न कुछ जरूर है। जैसे कि पौलुस ने 2 तीमुथियुस 3:16 में पौलुस ने लिखा:

> हर एक पवित्रशास्त्र... उपदेश, और समझाने, और सुधारने, और धर्म की शिक्षा के लिये लाभदायक है। (2 तीमुथियुस 3:16)

ध्यान दें कि पौलुस ने यहां पर किन्हीं अपवादों का उल्लेख नहीं किया। इसके विपरीत, उसने "सारे पवित्रशास्त्र" को सम्मिलित किया। इसका अर्थ है कि आनुष्ठानिक और सार्वजनिक नियम भी धार्मिकता के मार्गों में हमें प्रशिक्षित करने में उपयोगी हैं।

अब, इस बात को महसूस करना एक आरंभिक महत्वपूर्ण कदम है कि सार्वजनिक और आनुष्ठानिक नियम आज भी मसीही नैतिक शिक्षा में हमारे नैतिक स्तर का भाग हैं। परन्तु यह जानना भी महत्वपूर्ण है कि हमारे नैतिक मूल्यांकनों में इस प्रकार के नियमों को कैसे शामिल किया जाए। आखिरकार, हम पहले ही यह कह चुके हैं कि इन नियमों के संबंध में हमें पुराने नियम के आचरण को जारी नहीं रखना है। तो इन नियमों के साथ हमें क्या करना है? हमें प्रयोग की कौनसी प्रक्रिया का अनुसरण करना चाहिए?

इन सारे अध्यायों की श्रृंखला में हमने इस बात पर बल दिया है कि नैतिक निर्णयों में एक व्यक्ति के द्वारा एक परिस्थिति पर परमेश्वर के वचन को लागू करना शामिल होता है। फलस्वरूप, किसी भी नियम का स्तर, चाहे यह नैतिक या सार्वजनिक या आनुष्ठानिक पहलुओं पर बल देता हो, जिस परिस्थिति पर उसे लागू करना है, और जो व्यक्ति इसे लागू करता है, को ध्यान में रखे बिना उसे अच्छी तरह से समझा या लागू नहीं किया जा सकता। और जब कभी भी परिस्थिति या व्यक्ति के विवरण बदलते हैं, तो परमेश्वर के वचन के प्रयोग में कुछ बदलावों की अपेक्षा हम कर सकते हैं।

उदाहरण के लिए, पुराने नियम की एक ऐसी घटना पर ध्यान देना सहायक होगा जिसमें एक सार्वजनिक नियम को ऐतिहासिक परिस्थिति पर लागू किया गया था। सलोफाद की पुत्रियों के विषय पर ध्यान दें, जिनका उल्लेख गिनती के अध्याय 27 में किया गया है। प्रतिज्ञा की भूमि के बारे में परमेश्वर द्वारा पहले दिए गए नियम के अनुसार भूमि का आवंटन परिवारों के अनुसार किया जाना था, और उन्हें पुत्रों के बीच बांटा जाना था। अब सलोफाद ऐसा व्यक्ति था जो मरूभूमि में मर गया था, और उसके पांच पुत्रियां थी परन्तु कोई पुत्र नहीं था। परमेश्वर द्वारा दिए गए संपत्ति आवंटन के नियम के अनुसार सलोफाद की पुत्रियां अपने पिता की भूमि को प्राप्त नहीं कर सकती थीं। अतः पुत्रियों ने मूसा से अपील की। गिनती 27:3-4 में हम उनकी विनती को पढ़ते हैं:

> हमारा पिता जंगल में मर गया... और उसके कोई पुत्र न था। तो हमारे पिता का नाम उसके कुल में से पुत्र न होने के कारण क्यों मिट जाए? हमारे चाचाओं के बीच हमें भी कुछ भूमि निज भाग करके दे। (गिनती 27:3-4)

अब यदि यहोवा ने नियम को कठोरता से या अविवेकी रूप से लागू करने का प्रयास किया होता, तो यह विषय बिल्कुल सीधा-सीधा होता। जैसे कि नियम है, सलोफाद की पुत्रियां प्रतिज्ञा की भूमि से हिस्से को प्राप्त नहीं कर सकतीं। परन्तु अगले ही पद में एक महत्वपूर्ण घटना घटती है। गिनती 27:5 के शब्दों को सुनें:

> उनकी यह बिनती मूसा ने यहोवा को सुनाई। (गिनती 27:5)

क्या यह अदभुत नहीं है? मूसा ने संपत्ति के आवंटन के नियम को प्रदान किया था और इस्राएल में सर्वोच्च न्यायी था। उस राष्ट्र के सभी अन्य लोगों के ऊपर, उसके पास परमेश्वर के मार्गों और परमेश्वर की व्यवस्था के विवरणों का का ज्ञान था। यदि किसी को पता था कि इस विषय का न्याय कैसे करना है, तो सबसे योग्य व्यक्ति मूसा ही था। फिर, उसे कैसे पता नहीं था कि क्या निर्णय सुनाए?

मूसा समझ गया था कि जो व्यवस्था परमेश्वर ने उसे दी थी, उसकी रचना ऐसी परिस्थिति को संचालित करने के लिए की गई थी जहां पुत्र थे। और वह जानता था कि इस नियम का लक्ष्य हर परिवार के स्थान को उनके गोत्र के बीच प्रदान करना और गौत्र की भूमि के उनके हिस्से को सुरक्षित रखना था। परन्तु सलोफाद की पुत्रियों के विषय में मूसा ने इस बात का सामना किया कि एक नई परिस्थिति पर इस नियम के द्वारा प्रकट स्तर को कैसे लागू करे। उसे परमेश्वर से सहायता की आवश्यकता थी, क्योंकि वह जानता था कि नई परिस्थिति इस बात को प्रभावित करेगी कि उसे नियम को कैसे लागू करना था। और परमेश्वर का प्रत्युत्तर ध्यान देने योग्य है। सुनिए गिनती 27:7-8 में परमेश्वर ने क्या कहा:

> सलोफाद की बेटियां ठीक कहती हैं;... इस्राएलियों से यह कह, कि यदि कोई मनुष्य निपुत्र मर जाए, तो उसका भाग उसकी बेटी के हाथ सौंपना। (गिनती 27:7-8)

यह अनुच्छेद कई अन्य उदाहरणों का उल्लेख भी करता है जिनमें एक पुरूष का उत्तराधिकार उसके पुत्रों के अतिरिक्त किसी और को भी मिल सकता है। परन्तु जो बात हम कह रहे हैं, वह यह है: परमेश्वर ने दर्शाया कि उसके चरित्र के उसी पहलू को भिन्न परिस्थितियों में भिन्न रूपों में लागू किया जाना था। कई रूपों में, मसीही भी वैसी मुश्किलों का सामना करते हैं जैसी मूसा ने की थीं: हमारे पास परमेश्वर की व्यवस्था का स्तर है, परन्तु हमें इसे एक नई परिस्थिति पर लागू करना है। मसीह और उसके कार्य के प्रकाश में सारी व्यवस्था की पुनः व्याख्या की जानी और उसे लागू किया जाना जरूरी है।

याजक के रूप में मसीह व्यवस्था के आनुष्ठानिक पहलुओं को पूरा करता है। व्यवस्था के आनुष्ठानिक सिद्धांत आज भी कार्यरत हैं, और हमें हमारे बलिदान के रूप में मसीह पर भरोसा रखते हुए और आत्मा एवं सत्य में आराधना करते हुए उनका अनुसरण करना है।

राजा के रूप में मसीह व्यवस्था के सार्वजनिक पहलुओं को पूरा करता है। और पृथ्वी पर उसके राष्ट्र, अर्थात् कलीसिया मसीह की विशाल प्रभुता के अधीन आने वाले पृथ्वी के प्रशासनों के अधिकार में सही रीति से जीवन जीने के द्वारा ही नहीं बल्कि राजा के रूप में मसीह का प्रत्यक्ष रूप से सम्मान करने और उसकी आज्ञाओं को मानने के द्वारा इन पहलुओं को मानने के प्रति उत्तरदायी है।

और अंत में, भविष्यवक्ता के रूप में मसीह व्यवस्था के नैतिक पहलुओं को पूरा करता है। परमेश्वर के समक्ष हमें स्वीकार किए जाने के आधार के रूप में हम केवल मसीह की नैतिकता पर निर्भर होते हैं। फिर भी, हमें स्वयं को मसीह के स्वरूप और उदाहरण के सदृश्य बनाना है, और उसके समान नैतिकता से जीने का प्रयास करना है जैसा उसने अपनी पृथ्वी पर की सेवकाई के दौरान किया और जैसे स्वर्ग में अभी भी कर रहा है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

सारांश में, नैतिक, आनुष्ठानिक और सार्वजनिक नियम की श्रेणियां कई रूपों में सहायक होती हैं, विशेषकर तब जब हम उन्हें भिन्न-भिन्न श्रेणियों की अपेक्षा हर नियम के पहलुओं के रूप में सोचते हैं। परन्तु इन श्रेणियों का प्रयोग परमेश्वर के नियमों के एक भाग या पहलू को नजरअंदाज करने के आधार के रूप में कभी नहीं किया जाना चाहिए। जैसे कि हम देख चुके हैं, परमेश्वर की सारी व्यवस्था नैतिकता के लिए हमारा स्तर बनी रहती है, और हम हमारी आधुनिक परिस्थिति के प्रति परमेश्वर की सारी व्यवस्था को लागू करने के लिए प्रेरित होते हैं। परमेश्वर की व्यवस्था का हरेक भाग मसीही नैतिक शिक्षा के लिए आज भी हमारे मानक के रूप में कार्य करता है।

अब जब हमने पवित्रशास्त्र की विविधता एवं पवित्रशास्त्र में परमेश्वर की व्यवस्था के प्रति एक मूलभूत दिशानिर्धारण को स्थापित कर लिया है, तो हमें उन रूपों पर ध्यान देकर जिसमें व्यवस्था परमेश्वर के लिखित प्रकाशन के अन्य भागों से संबंध रखती है, पवित्रशास्त्र की एकता पर भी ध्यान देना चाहिए।

पवित्रशास्त्र की एकता

आधुनिक कलीसिया में बाइबल के शिक्षकों को यह कहते हुए सुनना एक आम बात है, "मसीहियों को व्यवस्था का पालन करने की जरूरत नहीं है - हमें तो बस सुसमाचार पर विश्वास करना है।" या "एकमात्र नियम जिसकी परमेश्वर हमसे पालना चाहता है, वह है प्रेम का नियम।" अब, सही बात कहें तो इन विषयों के बारे में हर बात जो बाइबल कहती है वह पूरी तरह से स्पष्ट नहीं है। परन्तु यदि हम सही रीति से बाइबल के प्रलेखों का विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि पवित्रशास्त्र की एकता इतनी विशाल है कि व्यवस्था बाइबल की हरेक बात के साथ सामंजस्य को रखती है।

हमारे अध्याय के इस भाग में हम उन अनेक रूपों को देखेंगे जिसमें व्यवस्था बाइबल की अन्य शिक्षाओं के परस्पर संबंध को रखती है। पहला, हम देखेंगे कि बाइबल प्रेम की आज्ञा के साथ कैसे संबंधित है। दूसरा, हम हमारे ध्यान को व्यवस्था और अनुग्रह के सुसमाचार के बीच संबंध की ओर लगाएंगे। तीसरा, हम छुटकारे के इतिहास और नई वाचा के संबंध में व्यवस्था को जांचेंगे। और चौथा, हम सारी स्वर्गीय आज्ञाओं के बीच समन्वय के विषय पर ध्यान देंगे। आइए हम प्रेम की आज्ञा और व्यवस्था के बीच संबंध के साथ आरंभ करेंगे।

प्रेम की आज्ञा

जब हम "प्रेम की आज्ञा" के बारे में बात करते हैं, तो पहले और सबसे महत्वपूर्ण रूप में परमेश्वर से प्रेम करने के बारे में बात कर रहे हैं। और इस आज्ञा के आशय से हम एक-दूसरे के साथ प्रेम करने की आज्ञा का भी उल्लेख कर रहे हैं। यद्यपि इनमें से कोई भी आज्ञा दस आज्ञाओं में नहीं आती, परन्तु उनमें एक निश्चित प्रमुखता पाई जाती है जिसे स्वीकार किया जाना जरूरी है। जैसे कि यीशु ने मत्ती 22:37-40 में कहा था:

> तू परमेश्वर अपने प्रभु से अपने सारे मन और अपने सारे प्राण और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रख। बड़ी और मुख्य आज्ञा तो यही है। और उसी के समान यह दूसरी भी है, कि तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख। ये ही दो आज्ञाएं सारी व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं का आधार है। (मत्ती 22:37-40)

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

यहां यीशु ने परमेश्वर से प्रेम करने की आज्ञा को सारी आज्ञाओं में बड़ी आज्ञा के रूप में पहचाना। उसने भी यह दर्शाया कि हमारे पड़ोसी से प्रेम करने की आज्ञा दूसरी सबसे बड़ी आज्ञा है। और उसने सिखाया कि बाकी सारी आज्ञाएं इन दो आज्ञाओं पर निर्भर करती हैं। अतः हर दूसरी आज्ञा किसी न किसी भाव में इस बात का वर्णन है कि हमें किस प्रकार से परमेश्वर और अपने पड़ोसियों से प्रेम करना है।

वास्तव में, रोमियों 13:9-10 में पौलुस ने यहां तक कहा:

> सब का सारांश इस बात में पाया जाता है, कि अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख।... इसलिये प्रेम रखना व्यवस्था को पूरा करना है। **(रोमियों 13:9-10)**

और गलातियों 5:14 में उसने लिखा:

> क्योंकि सारी व्यवस्था इस एक ही बात में पूरी हो जाती है, कि तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख। **(गलातियों 5:14)**

अब पौलुस के शब्दों को बहुत सावधानी के साथ पढ़ना जरूरी है, क्योंकि बहुत से धर्मविज्ञानियों ने यह सोचने की गलती की है कि इन पदों में पौलुस ने सिखाया है कि मसीहियों को प्रेम की आज्ञा को मानने के अतिरिक्त किसी और आज्ञा को मानने की आवश्यकता नहीं है। फिर भी, सत्य यह है कि पौलुस कह रहा था कि हमारे पड़ोसी से प्रेम करने की आज्ञा किसी अन्य आज्ञा से अलग नहीं है क्योंकि पवित्रशास्त्र की सारी आज्ञाएं हमें अपने पड़ोसी से प्रेम करना सिखाती हैं। अतः यदि हम सच्चाई के साथ सिद्ध रूप में हमारे पड़ोसी से प्रेम करते हैं तो हम उन सारी आज्ञाओं का पालन कर लेंगे जिनकी आज्ञा परमेश्वर ने दी है।

दूसरे रूप में कहें तो, न तो यीशु ने और न ही पौलुस ने व्यवस्था के अनेक नियमों को एक ऐसे सरल नियम से बदलने का प्रयास किया जिसमें केवल परमेश्वर और पड़ोसी से प्रेम करना ही हो। बल्कि उन दोनों का अभिप्राय यह सिखाना था कि परमेश्वर और पड़ोसी से प्रेम करने की आज्ञाएं हर नियम का पहलू है और इसलिए जो व्यक्ति सिद्धता के साथ प्रेम करता है वह वयवस्था की हर आज्ञा का पालन करेगा। उदाहरण के तौर पर, व्यवस्थाविवरण 6 को देखें जहां से यीशु ने मत्ती के उस अनुच्छेद में उद्धृत किया था जिसे हमने अभी पढ़ा है। व्यवस्थाविवरण 6:1-5 में यह लिखा है:

> यह वह आज्ञा, और वे विधियां और नियम हैं जो तुम्हें सिखाने की तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने आज्ञा दी है, कि तुम... यहोवा का भय मानते हुए उसकी उन सब विधियों और आज्ञाओं पर, जो मैं तुझे सुनाता हूँ, अपने जीवन भर चलते रहें... तू अपने परमेश्वर यहोवा से अपने सारे मन, और सारे जीव, और सारी शक्ति के साथ प्रेम रखना। **(व्यवस्थाविवरण 6:1-5)**

यहां हम देख सकते हैं कि इसके मूल संदर्भ में परमेश्वर से प्रेम करने के बारे में यीशु ने जो अनुच्छेद उद्धृत किया था वह व्यवस्था की उन सारी भिन्न-भिन्न आज्ञाओं से अभिन्न रूप से जुड़ा हुआ है जो परमेश्वर ने मूसा के माध्यम से दीं थीं। परमेश्वर से प्रेम करने की आज्ञा का अभिप्राय दूसरी आज्ञाओं का स्थान लेना कभी नहीं था। अतः जब हम यह समझने का प्रयास करते हैं कि मसीही नैतिक शिक्षा में व्यवस्था का प्रयोग कैसे करें, तो हमें हमारे मन में प्रेम के महत्व और प्रमुखता को रखना जरूरी है। वास्तव में, हमें यह याद रखना जरूरी है कि परमेश्वर की सारी व्यवस्था परमेश्वर और पड़ोसी से प्रेम करने में समाहित है। परन्तु इसके साथ-साथ हमें इस बात को भी पहचानने की जरूरत है कि प्रेम की आज्ञा पर पवित्रशास्त्र का महत्व हमें बाइबल की अन्य आज्ञाओं को न मानने की आजादी नहीं देता है।

अब जब हमने प्रेम की आज्ञा और बाकी व्यवस्था के बीच परस्पर-निर्भरता को देख लिया है, तो हम यह देखने के लिए तैयार हैं कि अनुग्रह का सुसमाचार परमेश्वर की व्यवस्था से कैसे संबंधित है।

अनुग्रह का सुसमाचार

मसीहियों के बीच एक आम गलतफहमी है कि व्यवस्था अनुग्रह के सुसमाचार के विपरीत है। अनेक लोग मानते हैं कि क्योंकि व्यवस्था के कार्यों के बिना अनुग्रह से हमारा उद्धार हुआ है, इसलिए व्यवस्था को मानने का उत्तरदायित्व हमारा नहीं है। अन्य लोग मानते हैं कि व्यवस्था को पापियों के विरूद्ध खतरे और भय के रूप में ही उचित रीति से देखा जा सकता है, वहीं इसके विपरीत सुसमाचार वह है जो व्यवस्था द्वारा हमें दोषी ठहराए जाने के बाद भी उद्धार प्रदान करता है। सारी वास्तविकता में, व्यवस्था और अनुग्रह के सुसमाचार के बीच संबंध के विषय में ऐसे कई दृष्टिकोण हैं जिनका उल्लेख यहां करना संभव नहीं है। अतः, सारी गलत धारणाओं का सामना करने के लिए हम इस संबंध के बाइबल-संबंधी दृष्टिकोण का वर्णन करेंगे, ऐसा करने के लिए हम उस पर ध्यान देंगे जिसे हम पारंपारिक रूप से "व्यवस्था के तीन प्रयोग" कहते हैं।

प्रोटेस्टेंट सुधार के समय से धर्मविज्ञानियों ने प्रायः उन तीन रूपों के बारे में बात की है जिनमें पवित्रशास्त्र में व्यवस्था का प्रयोग किया जाता है। यद्यपि अनेक भिन्न प्रयोगों की वैधता के बारे में काफी सहमति पाई जाती है, फिर भी धर्मविज्ञानी इन प्रयोगों की गिनती में सदैव सहमत नहीं रहे हैं। अतः असंमजस को दूर रखने के लिए, इन अध्यायों में हम निम्नलिखित क्रम में व्यवस्था के तीन प्रयोगों का उल्लेख करेंगे:

व्यवस्था का पहला प्रयोग है, शैक्षणिक प्रयोग, या शिक्षक के रूप में व्यवस्था का प्रयोग। जब इसे शैक्षणिक रूप में इस्तेमाल किया जाता है तो व्यवस्था उनके पापों को उजागर करके या दर्शा के और इसके विरूद्ध दण्ड की चेतावनी देकर लोगों को मसीह के पास लाती है।

व्यवस्था का दूसरा प्रयोग उसका सार्वजनिक प्रयोग है। जब हम सार्वजनिक लक्ष्य के लिए व्यवस्था का इस्तेमाल करते हैं, तो हम इसका प्रयोग समाज में पाप को रोकने के लिए करते हैं। कभी-कभी इस प्रयोग को भौतिक अनुशासन के साथ भी जोड़ा जाता है।

व्यवस्था का तीसरा प्रयोग निर्देशात्मक प्रयोग है। यह विश्वासयोग्य मसीहियों के लिए निर्देशिका या नियम के रूप में प्रयोग है।

व्यवस्था का शैक्षणिक या पहला प्रयोग बताता है कि परमेश्वर की व्यवस्था अविश्वासियों के भीतर किस प्रकार पाप को बढ़ावा देती है और उनके लिए मसीह की आवश्यकता को दर्शाती है। हम सब इस अनुभव को जानते हैं कि जब किसी बात के लिए मना किया जाता है तो उसकी ओर आकर्षण बढ़ जाता है। पौलुस ने रोमियों 7:7-8 में व्यवस्था के शैक्षणिक प्रयोग के साथ अपने अनुभव के बारे में लिखा, जहां उसने ये शब्द लिखे:

> व्यवस्था यदि न कहती कि लालच मत कर तो मैं लालच को न जानता। परन्तु पाप ने अवसर पाकर आज्ञा के द्वारा मुझ में सब प्रकार का लालच उत्पन्न किया, क्योंकि बिना व्यवस्था के पाप मुर्दा है। (रोमियों 7:7-8)

व्यवस्था का प्रयोग आम तौर पर बाइबल की इस शिक्षा से जोड़ा जाता है कि विश्वासी एक समय में व्यवस्था के अधीन थे, परन्तु अब अनुग्रह के अधीन हैं। जब गैरविश्वासी व्यवस्था के स्तरों और दण्ड का सामना करते हैं, तो वे और अधिक पाप करने के लिए उत्सुक हो जाते हैं, और वे फिर उस दण्ड या श्राप को पहचान लेते हैं जिनकी चेतावनी व्यवस्था उनके पापों के कारण देती है। यह चेतावनी कुछ गैरविश्वासियों को

मसीह के पास लाती है, जो अपने अनुग्रह से उन्हें पाप के श्राप से बचाता है। रोमियों 6:14 में पौलुस के शब्दों के पीछे का विचार यह है:

> और तुम पर पाप की प्रभुता न होगी, क्योंकि तुम व्यवस्था के आधीन नहीं बरन अनुग्रह के आधीन हो। (रोमियों 6:14)

इस भाव में, व्यवस्था का शैक्षणिक प्रयोग गैरविश्वासियों पर प्रत्यक्ष रूप से लागू नहीं होता। एक बार जब एक व्यक्ति मसीह के पास आ जाता है, तो इस रूप में व्यवस्था का कार्य पूरा हो जाता है। अतः शैक्षणिक प्रयोग के संबंध में हम अब व्यवस्था के अधीन नहीं है।

व्यवस्था के सार्वजनिक या दूसरे प्रयोग में यह शामिल होता है कि व्यवस्था किस प्रकार इसका उल्लंघन करने वालों के विरूद्ध दण्ड की चेतावनी देने के द्वारा पाप को रोकती है। हम उन मार्गों के बारे में सोच सकते हैं जिनके माध्यम से हम हमारे ऊपर प्रशासनिक अधिकार रखने वालों द्वारा दण्ड देने के भय के कारण हमारे व्यवहारों को नियंत्रित करते हैं। विश्वासियों और अविश्वासियों के लिए व्यवस्था का इस्तेमाल एक जैसा है, और यह विशेषकर एक साधन के रूप में बुराई को रोकने हेतु लोक प्रशासन के लिए परमेश्वर के स्थान पर ध्यान देता है। आगामी अध्यायों में हम व्यवस्था के इस प्रयोग से संबंधित कई विषयों को संबोधित करेंगे, अतः अब के लिए हम बस इसका उल्लेख करेंगे, और इस बात पर ध्यान देंगे कि यह अनुग्रह के सुसमाचार के साथ असंगत नहीं है।

व्यवस्था के प्रयोग का तीसरा या निर्देशात्मक प्रयोग अध्ययन में तब बहुत सहायक होता है जब हम व्यवस्था के बारे में सुसमचार और मसीही नैतिक शिक्षा के संबंध में सोचते हैं। निर्देशात्मक प्रयोग इस प्रकार से व्यवस्था को लागू करता है जिस प्रकार हम इन व्याख्यानों में प्रयोग कर रहे हैं, अर्थात् मसीही जीवन के लिए परमेश्वर की इच्छा के प्रकाशन के रूप में। हम इनकी तुलना घरेलू नियमों के साथ कर सकते हैं जिन्हें हमारे माता-पिता ने हमें सुरक्षित रखने के लिए बनाया और जिनका हमने पालन भी किया क्योंकि हम हमारे माता-पिता से प्रेम करते थे और उन पर भरोसा करते थे। उदाहरण के तौर पर, 1 यूहन्ना 3:4 के शब्दों को सुनें:

> जो कोई पाप करता है, वह व्यवस्था का विरोध करता है; और पाप तो व्यवस्था का विरोध है। (1 यूहन्ना 3:4)

यूहन्ना ने ये शब्द मसीह के स्वर्गारोहण के काफी समय के बाद लिखे। फिर भी, उसने ये दावा किया कि व्यवस्था हमारे व्यवहार का स्तर बना हुआ है। उसने तो पाप को व्यवस्था को तोड़ने के संबंध में परिभाषित तक कर दिया। सरल रूप में कहें तो, व्यवस्था अभी भी वह स्तर है जिसके द्वारा मसीही व्यवहार को परखा जाता है कि वह धर्मी है या पापमय। और अनेक अनुच्छेद दर्शाते हैं कि जब व्यवस्था का प्रयोग मसीही व्यवहार के स्तर के रूप में किया जाता है, तो यह पूरी तरह से सुसमाचार के साथ संगत होता है।

हमारे उद्धार पाने से पहले हम सब पापी थे और व्यवस्था का पालन करने के अयोग्य थे। हम व्यवस्था के श्राप के अधीन थे क्योंकि हम व्यवस्था के तोड़ने वाले थे। परन्तु अब हम उद्धार पा चुके हैं, मसीह में हमें पूरी तरह से व्यवस्था का पालन करने वाले गिना जाता है, इसलिए हम व्यवस्था की प्रतिज्ञा की हुई उद्धार की आशीषें और जीवन प्राप्त करते हैं। पौलुस इस अवस्था को व्यवस्था के श्राप के अधीन होने के विपरीत "अनुग्रह के अधीन" होने के रूप में कहता है।

सारांश में, जब विश्वासी इस भाव में "व्यवस्था के अधीन" नहीं है कि जब हम पाप करते हैं तब हम इसके श्राप को सहते हैं, हम इस भाव में "व्यवस्था के अधीन" हैं कि हम इसकी आशीषों को प्राप्त करते हैं,

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

और इस भाव में भी कि हम इसे मानने के प्रति प्रेरित होते हैं। याकूब 1:25 में याकूब इस विषय को इस रूप में कहता है:

> पर जो व्यक्ति स्वतंत्रता की सिद्ध व्यवस्था पर ध्यान करता रहता है, वह अपने काम में इसलिये आशीष पाएगा कि सुनकर भूलता नहीं, पर वैसा ही काम करता है। (याकूब 1:25)

जब हमने देख लिया है कि किस प्रकार परमेश्वर की व्यवस्था प्रेम की आज्ञा और अनुग्रह के सुसमाचार को संपूर्ण करती है, तो हमें व्यवस्था को नई वाचा और छुटकारे के इतिहास के विकास के संबंध में देखना चाहिए।

नई वाचा

जब हम छुटकारे के इतिहास और नई वाचा के बारे में बात करते हैं, तो हम उन बदलावों का उल्लेख कर रहे हैं जो यीशु मसीह के कार्य के फलस्वरूप पुराने और नए नियम के समयों के बीच हुए। और इस समय हम उस रूप में सबसे अधिक रूचि रखते हैं जिसमें ये बदलाव मसीही नैतिक शिक्षा में व्यवस्था के हमारे प्रयोग को प्रभावित करते हैं। पुराने नियम में यिर्मयाह 31:31 में, नई वाचा का उल्लेख नाम के साथ केवल एक बार हुआ है। दूसरी ओर नया नियम इसका उल्लेख कई बार करता है। परन्तु हमारे उद्देश्यों के लिए सबसे सहायक उल्लेख इब्रानियों अध्याय 8 में पाया जा सकता है, जहां लेखक यिर्मयाह 31 से बहुत सारी बातों को लेता है और उसे कलीसिया पर लागू करता है। इब्रानियों 8:8-10 में हम इन शब्दों को पढ़ते हैं:

> मैं इस्राएल के घराने के साथ, और यहूदा के घराने के साथ, नई वाचा बान्धूंगा। मैं अपनी व्यवस्था को उन के मनों में डालूंगा, और उसे उन के हृदय पर लिखूंगा, और मैं उन का परमेश्वर ठहरूंगा, और वे मेरे लोग ठहरेंगे। (इब्रानियों 8:8-10)

ध्यान दें कि इस अनुच्छेद में नई वाचा वह बात नहीं है जो हमें व्यवस्था से मुक्त करती है। बल्कि, नई वाचा में व्यवस्था अभी भी मुख्य है। वास्तव में, नई वाचा के नियमों के रूप में व्यवस्था हमारे मनों और हृदयों पर लिखी हुई है।

हमारे हृदयों और मनों में व्यवस्था के लिखे जाने का रूपक दर्शाता है कि हम व्यवस्था को जानते हैं और उससे प्रेम करते हैं। पुरानी बात के रूप में व्यवस्था को पीछे छोड़ने की अपेक्षा नई वाचा में हम व्यवस्था को अपने अन्दर समा लेते हैं और गंभीरता के साथ इसका पालन करते हैं। वास्तव में, यह वह तरीका है कि पुरानी वाचा में भी व्यवस्था का पालन किस तरह से होना चाहिए था। जैसा कि यहोवा ने व्यवस्थाविवरण 6:6 में कहा:

> और ये आज्ञाएं जो मैं आज तुझ को सुनाता हूँ वे तेरे मन में बनी रहें। (व्यवस्थाविवरण 6:6)

और जिस प्रकार भजनकार ने भजन 119:11 में साक्षी दी थी:

> मैं ने तेरे वचन को अपने हृदय में रख छोड़ा है, कि तेरे विरूद्ध पाप न करूं। (भजन 119:11)x

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

परमेश्वर का वचन सदैव उसके लोगों के हृदयों और मनों में वास करता था, और यह पुराने नियम में भी वास्तव में अनेक लोगों के हृदयों और मनों में था। हमारे हृदयों और मनों में व्यवस्था का लिखा जाना नई वाचा में कुछ नया या अलग नहीं हैः यह पुराने नियम के साथ निरन्तरता की बात है।

हम यह भी कह सकते हैं कि नई वाचा व्यवस्था का पालन करने के और भी बड़े कारण प्रदान करती है। आखिरकार, पुराने नियम में विश्वासियों ने व्यवस्था की अपनी आज्ञाकारिता के आधार के रूप में मिस्र से निर्गमन की ओर मुड़कर देखा एवं प्रतिज्ञा की भूमि में जीवन की ओर आगे देखा। परन्तु आज मसीही व्यवस्था के प्रति हमारी आज्ञाकारिता के आधार के रूप में मसीह में उद्धार के एक बहुत बड़े कार्य की ओर मुड़कर देखते हैं और मसीह के द्वितीय आगमन में उसके और भी अधिक महान् कार्य की ओर आगे देखते हैं।

परन्तु फिर से, यह महत्वपूर्ण है कि मसीही होने के नाते पुरानी और नई वाचाओं के बीच हुए बदलावों के प्रकाश में हम व्यवस्था को पुनः लागू करते हैं। जैसा कि अपनी पुस्तक में इब्रानियों के लेखक ने 10:1 में लिखा:

> क्योंकि व्यवस्था आनेवाली अच्छी वस्तुओं का प्रतिबिम्ब है, पर उन का असली स्वरूप नहीं। (इब्रानियों 10:1)

नई वाचा में मसीह को ऐसे प्रकट किया गया है जिसे व्यवस्था ने पहले ही पहचान लिया था। और फलस्वरूप, अनेक नियम जिन्होंने पुराने नियम के विश्वासियों को बलिदान करने जैसे कार्य करने के लिए प्रेरित किया अब उस वास्तविकता, अर्थात् मसीह के बलिदान, के द्वारा पूरे हो गए हैं जिसकी वे पूर्वधारणा थे। फलस्वरूप, हम हमारे बलिदान के रूप में यीशु पर निर्भर रहने के द्वारा, न कि बैलों या बकरियों को बलिदान करने के द्वारा, सही रूप से इन नियमों का पालन करते हैं।

आगामी अध्यायों में हम उन समायोजनों को ध्यान से देखेंगे जिनका प्रयोग हमें नए नियम के युग में व्यवस्था को लागू करने के लिए करना जरूरी है। परन्तु इस समय यह स्पष्ट हो जाना चाहिए कि सैद्धांतिक रूप से व्यवस्था नई वाचा के युग के दौरान लागू होती है।

जब हमने प्रेम, सुसमाचार और नई वाचा के संबंध में व्यवस्था को देख लिया है, तो हम हमारे अंतिम विषय को संबोधित करने के लिए तैयार हैं: परमेश्वर की सारी आज्ञाओं में परस्पर समन्वयता।

समन्वयता

बाइबल की कानूनी प्रणाली में कई नियम और आज्ञाएं पाई जाती हैं। ये इतने अधिक हैं और इतने अधिक विषयों को स्पर्श करते हैं कि ये नियम कभी-कभी परस्पर विरोधी भी प्रतीत होते हैं। नियमों के बीच विरोध एक ऐसी समस्या है जिसका सामना हर नियम आधारित नैतिक प्रणाली करती है। परन्तु बाइबल के नियम के विषय में कोई वास्तविक विरोधाभास नहीं पाया जाता; परमेश्वर के नियम वास्तव में कभी परस्पर विरोधी नहीं होते, उसी प्रकार जैसे परमेश्वर का चरित्र कभी अपने में विरोधी नहीं होता। इसकी अपेक्षा, पवित्रशास्त्र की सभी नैतिक शिक्षाएं परस्पर सिद्ध समन्वयता रखती हैं।

जैसा कि हमने याकूब 2:10 में देखा था, व्यवस्था एकीकृत रूप में रहती है:

> क्योंकि जो कोई सारी व्यवस्था का पालन करता है परन्तु एक ही बात में चूक जाए तो वह सब बातों में दोषी ठहरा। (याकूब 2:10)

क्योंकि व्यवस्था एकीकृत है, इसलिए इसकी भिन्न आज्ञाएं सामूहिक रूप से हमारी आज्ञाकारिता की मांग करती हैं। कहने का अर्थ है, जब कभी भी हमारे कार्य व्यवस्था के किसी विशेष नियम के साथ सच्ची सहमति को दर्शाते हैं, तो वे पूरी व्यवस्था के साथ सहमति दर्शाते हैं।

अतः, जब कभी भी यह प्रकट होता है कि पवित्रशास्त्र के कुछ नियम परस्पर विरोधी हैं, तो इसका अर्थ यही होता है कि हमने व्यवस्था को सही रीति से अभी तक समझा नहीं है। सच्चाई यह है कि हम संपूर्ण व्यवस्था को कभी समझ नहीं पाएंगे, इसलिए समय-समय पर हम परमेश्वर के भिन्न नियमों के बीच असमंजस को महसूस करेंगे। हम व्यावहारिक रूप से मुश्किलों का समाधान कैसे करेंगे? ऐसी परिस्थितियों के बारे में बहुत कुछ कहा जा सकता है, परन्तु हम केवल दो का ही उल्लेख करेंगे।

पहला, परमेश्वर के नियम इस अप्रत्यक्ष धारणा के साथ दिए गए हैं कि कभी-कभी कुछ नियम दूसरे नियमों पर प्रमुखता को रखते हैं। उदाहरण के तौर पर, मत्ती 5:23-24 में यीशु निम्नलिखित निर्देश देता है:

> इसलिये यदि तू अपनी भेंट वेदी पर लाए, और वहां तू स्मरण करे, कि मेरे भाई के मन में मेरी ओर से कुछ विरोध है, तो अपनी भेंट वहीं वेदी के साम्हने छोड़ दे। और जाकर पहिले अपने भाई से मेल मिलाप कर; तब आकर अपनी भेंट चढ़ा। (मत्ती 5:23-24)

यीशु ने सिखाया कि परमेश्वर के लोगों के बीच मेलमिलाप परमेश्वर को चढ़ाए जाने वाले कुछ बलिदानों पर प्रमुखता रखता है- ताकि एक विश्वासी यदि वेदी पर भी हो और अपना बलिदान चढ़ाने वाला ही हो तो उसे पहले अपने भाई के साथ मेलमिलाप करना चाहिए और फिर बलिदान चढ़ाना चाहिए।

जब कभी भी कहा जाता है कि कुछ पाप दूसरे पापों से अधिक बुरे हैं या कुछ नियम दूसरे नियमों से अधिक महत्वपूर्ण हैं, तो हमें यह महसूस करना चाहिए कि बाइबल अपनी भिन्न आज्ञाओं को प्रमुखता के भिन्न-भिन्न स्तर प्रदान करती हैं। अतः एक नियम को दूसरे नियम से अधिक प्रमुखता देना वास्तव में संपूर्ण व्यवस्था के अनुरूप है, और इसलिए यह भिन्न नियमों के बीच विरोध नहीं है।

दूसरा, बाइबल के नियम इस अप्रत्यक्ष धारणा के साथ भी दिए गए हैं कि नियमों के अपवाद भी हैं। कहने का अर्थ है कि बाइबल की कानूनी प्रणाली में यह अनुमान लगाया जाता है कि आकस्मिक एवं अन्य असामान्य परिस्थितियों में सामान्य नियमों की अपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण सिद्धांत ज्यादा प्रमुखता को प्राप्त करते हैं।

उदाहरण के तौर पर, प्रेरितों के काम 5 अध्याय में प्रेरितों और सनहेदरिन के बीच टकराव पर ध्यान दीजिए। इस परिस्थिति में सनहेदरिन ने प्रेरितों को यीशु के बारे में प्रचार करना बंद करने की आज्ञा दी, परन्तु प्रेरितों ने उनकी आज्ञा को नजरअंदाज किया। अपने कार्य के प्रति प्रेरितों का बचाव प्रेरितों के काम 5:29 में लिखा हुआ है:

> मनुष्यों की आज्ञा से बढ़कर परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना ही कर्तव्य कर्म है। (प्रेरितों के काम 5:29)

इस विषय में, यहूदी लोगों के प्रशासनिक मंडल होने के नाते सनहेदरिन के पास प्रेरितों पर कुछ कानूनी अधिकार था। और सामान्य नियम के रूप में, बाइबल मानवीय अधिकारियों की आज्ञा मानने की मांग हमसे करती है। परन्तु जब सनहेदरिन परमेश्वर की आज्ञा के विरोध में आई, तो इस बात ने सामान्य नियम के लिए इस बात के प्रति एक अपवाद की रचना की कि हमें हमारे मानवीय अगुवों की आज्ञा माननी है। इस अपवाद के कारण ही प्रेरितों के लिए सनहेदरिन की अवज्ञा करना और परमेश्वर की आज्ञा मानना धर्मी और सही कार्य था।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

परन्तु फिर से, यह ऐसा विषय नहीं था जहां एक नियम दूसरे नियम के प्रति विरोध में था। आखिरकार, व्यवस्था एकीकृत है जो परमेश्वर के चरित्र को दर्शाती है, और परमेश्वर का चरित्र अपने ही प्रति विरोधी नहीं है। बल्कि, व्यवस्था उस सामान्य सिद्धान्त का पूर्वानुमान लगाती है जो कभी-कभी कार्य के विपरीत मार्ग को दर्शाएंगे। इन विषयों में, सही कार्य की खोज हर आज्ञा और सिद्धान्त को देखने के द्वारा और हर जिम्मेदारी के प्रकाश में परिस्थितियों और प्रेरणाओं को मापने के द्वारा की जानी चाहिए। कार्य का सही मार्ग अपने पूरे अर्थ में पूरी व्यवस्था के प्रति आज्ञाकारी होगा, फिर चाहे यह वैसा प्रतीत न हो जैसे कि कुछ सिद्धान्तों को लागू करते हुए हम देखते हैं।

निसंदेह, हमें सावधान रहना है जब हम पवित्रशास्त्र की भिन्न आज्ञाओं को उनकी प्रमुखता के रूप में रखते हैं। और क्योंकि हम सीमित हैं, पतित मानवीय प्राणी हैं, इसलिए कोई संदेह नहीं कि ऐसे समय भी होंगे जब हम सही कार्य को पहचान न पाएं, और ऐसे समय भी होंगे जब हम गलत निर्णय भी ले लें। फिर भी, हमें यह सदैव याद रखना चाहिए कि पवित्रशास्त्र एकीकृत है, और इसलिए हमें ऐसे तरीकों को ढूंढ़ने का प्रयास करना चाहिए जिनमें परमेश्वर के नियम परस्पर समन्वयता रखते हों।

निष्कर्ष

इस अध्याय में हमने उन रूपों या तरीकों के बारे में बात की है जिनमें पवित्रशास्त्र के अनेक भाग और पहलू मसीही नैतिक शिक्षा के लिए परमेश्वर के स्तर के रूप में एक साथ काम करते हैं। हमने देखा है कि पवित्रशास्त्र में भाषा और साहित्य की विविधता को भिन्न-भिन्न रूपों में देखा जाना चाहिए और कि इन दोनों में नैतिक शिक्षा के बारे में हमें बताने के लिए कुछ विशेष बात है। हमने पवित्रशास्त्र में परमेश्वर की व्यवस्था के भागों और कार्यों की खोज भी की है। और हमने देखा है कि किस प्रकार व्यवस्था अपने में और पवित्रशास्त्र के अन्य सभी भागों के प्रति एकीकृत है।

जब हम बाइबल-संबंधी नैतिक शिक्षा के हमारे अध्ययन को जारी रखते हैं, तो यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि पवित्रशास्त्र के अनेक भिन्न-भिन्न भाग और पहलू हैं और कि प्रत्येक भाग और पहलू भिन्न-भिन्न तरीकों से हमें नैतिक जानकारियां प्रदान करता है। जब हम इस अध्ययन को जारी रखते हैं और परमेश्वर के समक्ष हमारे जीवन को जीते हैं तो इन विचारों को मन में रखते हुए हम पवित्रशास्त्र के प्रत्येक भाग और पहलू को और अधिक जिम्मेदारी के साथ देख पाएंगे और हमारे लिए परमेश्वर द्वारा प्रकट स्तरों के साथ हमारे जीवनों को और भी अधिक गहराई से जोड़ सकेंगे।